DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

YouTube

मूल्य : 70/-

वर्ष 2 | अंक 17

अक्टूबर 2026

शिक्षा | साहित्य | कला | संस्कृति



काव्यशैली

शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति

प्रबंध संपादक
रामश्याम 'हसीन'
संपादक
शैली भागवत 'आस'
सह-संपादक
संगीता अहलावत
कानूनी सलाहकार
अजय मिश्रा दबंग
संरक्षक
मंगल नसीम (दिल्ली)
लव कुमार प्रणय (अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)
रमेश शर्मा (चित्तौड़गढ़, राजस्थान)
सावित्री मलिक (दिल्ली)
तनु पवार (राजस्थान इकाई प्रभारी)

सर्वाधिकार पत्रिका के स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक के पास सुरक्षित हैं।

स्वामी, प्रकाशक रामश्याम द्वारा आलम ग्राफिक्स से डिज़ाइन एवं मुद्रक कलर एज आनंद पर्वत दिल्ली से प्रिंट होकर RZ-149, मंगोलपुर खुर्द, दिल्ली-83 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित कोई भी जानकारी व विचार लेखकों के अपने हैं इनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।
काव्यशैली पत्रिका में प्रकाशित किसी रचना/समाचार/आलेख से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस सामग्री का किसी भी तरह से प्रयोग (छाया प्रति/तथ्य/सामग्रीगत) भारतीय कॉपी राइट एक्ट के तहत दण्डनीय अपराध है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र दिल्ली राज्य होगा।

काव्यशैली मासिक पत्रिका में सभी पद अवैतनिक हैं।

kavyashaily049@gmail.com | 7982407065, 9425478866
https://www.sahityashreeprakashan.com/kavyashaily/

इस अंक में...

संपादकीय	शैली भागवत 'आस'	4
कविताएँ/गीत/ग़ज़ल		
कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी	चित्रा शर्मा 'वीथिका'	5
घर पधारो प्रथमेश	उद्देश्य तिवारी 'उदय'	6
दीपोत्सव	सरला मेहता	6
शुभ दीपावली	नलिन खोईवाल	7
इक त्योहार करो	सुरेन्द्र व्यास 'सरल'	7
आएगा आसो माह	मित्तल टिलवा	8
बीते पल की बात...	मंगेशकुमार आवारी	8
माँ कुष्मांडा	कृष्णा गौतम	8
शुभ दीपावली	कृष्णा गौतम	9
माँ दुर्गा के नौ रूप	साधना शर्मा	9
संगत का रंग	डॉ. मदन चन्द्र करण	10
विजयादशमी	साधना शर्मा	11
शुभ दीपावली	जगदीश शर्मा सहज	11
ग़ज़ल	अरविन्द मिश्र 'हर्ष'	11
ग़ज़ल	अरविन्द मिश्र 'हर्ष'	11
अहंकार	जैन राजेंद्र गुलेच्छा 'राज'	12
दीपावली का पर्व	रिचा आनंद	12
पर्यावरण संतुलित होगा तभी...	शंकर घनशामदास अंदानी	13
ग़ज़ल	डॉ. वासिफ़ क़ाज़ी	13
विजयदशमी	भारती कुमार	14
पूजा के पार	अनीता चमोली 'अनू'	14
माँ	प्रताप सिंह	15
मैया के दरबार	लक्ष्मी कानोडिया	15
लक्ष्य विहीन पथ	राजकुमार जैन राजन	15
लेख/कहानी		
करवाचौथ : श्रृंगार से संस्कार तक	शिखा अग्रवाल	16
छोटी दीपावली	जगदीश शर्मा सहज	19
असली दिवाली	अनुपमा शर्मा	20
स्वतंत्र अस्तित्व	शिप्रा गुप्ता	22
हमारे त्योहारों से मिलता है हमको संस्कार	शंकर घनशामदास अंदानी	23
अधूरा मिलन (कहानी)	डॉ. सूर्य प्रताप राव	24
योग निष्ठ; अध्यात्म विज्ञान वैज्ञानिक	अश्विनी कुमार	30
पौराणिक कथाएं		32
कोंपल	किरण भंडारी	33
पुस्तक समीक्षा "जिसे मैं कह नहीं पाया"	गणेश प्रसाद 'गम्भीर'	34
यादों के आंगन में त्योहार	डॉ. संगीता बिंदल	35
पितृऋण-दानवीर कर्ण की... (कविता)	चित्रा शर्मा 'वीथिका'	38
समझा न कौशल तो... (कविता)	विरेन्द्र सिंह कौशल	39
तू अपना काम करता चल (कविता)	संगीता अहलावत	39
ग़ज़ल	पी एस परिहार	39
प्रतिक्रियाएँ		40
लोकतंत्र की हत्या	विकास संतोष	42
काव्यशैली सदस्यगण		42



संपादकीय

प्रिय रचनाकारों और आदरणीय पाठकों,

शरद ऋतु की इस सुहानी दस्तक और अक्टूबर के पावन महीने में, हमारा संपूर्ण परिवेश त्योहारों की दिव्य ऊर्जा से स्पंदित हो रहा है। त्योहार केवल कैलेंडर की तारीखें नहीं होते, बल्कि ये हमारी आत्मा को नव-ऊर्जा, प्रेम और भाईचारे के रंग से सराबोर करने वाले पावन उत्सव हैं।

अभी कुछ ही दिनों पूर्व, हमने पितृपक्ष में अपने पूर्वजों और पितरों का भावपूर्ण स्मरण कर उन्हें सादर नमन किया। पितर हमारी जड़ें हैं, उनका आशीर्वाद वह अदृश्य कवच है जो हमारे जीवन को सुरक्षित और समृद्ध रखता है। उन्हीं पूर्वजों के स्नेहिल आशीष का ही परिणाम है कि आज हमारे जीवन में खुशियों का यह सुंदर वसंत मुस्कुरा रहा है।

पूर्वजों के इसी वरदान की छत्रछाया में, चारों ओर शक्ति की भक्ति यानी 'नवरात्रि' की अद्भुत धूम मची है। घर-घर, पंडाल-पंडाल में आदि-शक्ति माँ दुर्गा की अनन्य आराधना हो रही है। इस पावन अवसर पर गरबा महोत्सव का उल्लास चरम पर है। रंग-बिरंगे परिधानों में थिरकते कदम और डांडिया की खनक, केवल नृत्य नहीं बल्कि माँ के चरणों में समर्पित एक सामूहिक भक्ति-उत्सव है।

नवरात्रि के इस भक्तिमय अनुष्ठान के ठीक बाद, विजयादशमी (दशहरे) का महापर्व हमें संदेश देता है कि अधर्म कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, अंततः जीत सत्य की ही होती है। रावण के पुतले का दहन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपी हर तरह की बुराई, अहंकार और नकारात्मकता के अंत का प्रतीक है।

दशहरे पर बुराई के इसी अंत के साथ, हमारा मन और संपूर्ण सृष्टि दिवाली के रूप में एक नई आशा, नव-चेतना और समृद्धि का दीप जलाने के लिए आतुर हो उठती है। मिट्टी का वह एक अदृश्य छोटा सा दीया, अज्ञान और निराशा के गहन अंधकार को चीरकर हमें प्रकाश की ओर बढ़ने की शाश्वत प्रेरणा देता है।

इस पावन और ऊर्जावान मास में, आप सभी सुधी कवियों और मूर्धन्य लेखकों ने त्योहारों के इन विभिन्न रंगों को अपनी लेखनी से जीवंत किया है। आपने पितरों के प्रति श्रद्धा, माँ दुर्गा की महिमा, गरबे के उल्लास, दशहरे के संदेश और दिवाली की आशा पर जो अति सुंदर, भावपूर्ण और श्रेष्ठ रचनाएँ साझा की हैं, वे वास्तव में इस अंक की आत्मा हैं। आपकी हर एक कविता और कहानी ने इन त्योहारों की ऊर्जा को शब्दों के अनमोल मोतियों में पिरो दिया है। सभी रचनाकार साधुवाद और बधाई के पात्र हैं।

आइए, सृजन के इस सिलसिले को यूँ ही अनवरत जारी रखें और अपने शब्दों से समाज में सकारात्मकता का उजाला फैलाते रहें। आप सभी को त्योहारों के इस पावन संगम की सस्नेह और हार्दिक शुभकामनाएँ!

- शैली भागवत 'आस'

संपादक

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।
भोर भये कर तारा-स्नान,
तुलसी-पीपल दीपदान।
आरोग्य, संपदा, यश-कीर्ति देता,
आकाश-दीप करे कल्याण।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

दीपावली हो या अहोई अष्टमी,
धनतेरस हो या भैया दूज,
कार्तिक के इन पावन पर्वों से
दूर हों संकट, मिटे हर दूज।
हर आँगन में दीप जलें,
हर मन में हो सुख की छाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

आता छठ का पावन त्यौहार,
गंगा तट बहती सुगंधित बयार।
उगते सूरज को अर्घ्य चढ़ाएँ,
ढलते रवि को शीश नवाएँ।
सुख-दुःख में सम रहना सिखलाए,
जीवन की सुंदर सीख बताए।
भक्ति-भाव से मन हरषाए,
हर घर सुख-समृद्धि ले आए।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

गोपाष्टमी पर गौ-सेवा से,
हो जाती माधव की सेवा।
आँवला नवमी पूजन-दान,
दे तन-मन को आरोग्य महान।
सेवा, श्रद्धा, दान-पुण्य से,
जीवन में आए सुख-समृद्धि।
हर मन में हो भक्ति-भावना,
हर आँगन में छाए खुशहाली।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

देव-प्रबोधिनी एकादशी आती,
व्रत-पूजन से मंगल गाती।
देव जागते, शुभ काम शुरू,
तुलसी-शालिग्राम विवाह मधुर।
ईख अर्पित कर भक्त मनाते,
मधुर फले जीवन की तरुणाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

द्वादशी को विष्णु मंदिर में,
जो ध्वजा चढ़ाता श्रद्धा से,
पुण्य-फल पाता जीवन भर,
हरि-कृपा बरसे उसके घर।
भक्ति-भाव से जो सिर झुकाए,
उसके जीवन में हो सुख-छाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

बैकुंठ चतुर्दशी का पावन दिन,
हरि-हर मिलन कराता अभिनव।
शैव-वैष्णव एक हो जाते,
भक्ति के दीप हृदय में जलाते।
हरि और हर का प्रेम सिखाता,
मिटती मन की सारी लड़ाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

पूरे मास करो गंगा-स्नान,
श्रद्धा से करते रहो दीपदान।
मन का तम हर, ज्योति जगाओ,
जीवन में नव प्रकाश लाओ।
पूर्णिमा पर मंदिर दमकें,
दीपों से जगमग हो अंगनाई।
हर दिशा में दीपोत्सव हो,
हर घर में मंगल की शहनाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

कहीं भंडारा, कहीं प्रसाद,
हर मुख पर हो हरि का नाम।
पावन हो तन, पावन हो मन,
भक्ति से भर जाए जीवन।
करुणा, सेवा, प्रेम जगाकर
मिट जाए मन की हर तन्हाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।

दीप जलें तो तम मिट जाए,
हर मन में उजियारा आए।
भक्ति, दया, सेवा और दान—
यही है कार्तिक की सच्ची कमाई।

कार्तिक मास बड़ा ही पुण्यदायी,
कैसे करूँ मैं इसकी बड़ाई।



चित्रा शर्मा 'वीथिका'
ऋषिकेश

घर पधारो प्रथमेश

शिव-शंकर के लाल,
पार्वती के नंदलाल,
दरस दिखा दो प्रभु,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

रिद्धि-सिद्धि के स्वामी,
प्रभु! तुम हो अंतर्यामी,
भक्तों की सुनो पुकार,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

सुख के दाता तुम ही,
दुःख के हरता तुम ही,
मेरी बिगड़ी सँवारो प्रभु,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

शुभ-लाभ हैं तेरे बालक,
तुम हो सृष्टि के पालक,
मेरा भी करो कल्याण,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

काम, क्रोध, मद, लोभ हरो,
मन के सारे दोष हरो,
हे विघ्नेश्वर! कृपा करो,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

वेदव्यास की वाणी सुनकर,
लिखा महाभारत, अपने कर,
बुद्धि अंशमात्र दे दो,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।

हे गणपति! मंगल के धाम,
तुमसे संचालित पूरा काम,
श्रद्धा से सजाए द्वार,
गौरी के गणेश,
घर पधारो प्रथमेश।



उद्देश्य तिवारी 'उदय'
सतना, मध्यप्रदेश

दीपोत्सव

तमासो मा ज्योतिर्गमय
संदेश है देता दीपोत्सव
सद्भाव माटी के दीपों में
मन-भावों का तेल भरे

उन फुटपाथोंवालों से ही
खील-बताशे दीप लेकर
रोजी-रोटी को अंजाम दो
दिवाले में भी दिवाली हो

क्यूँ न दीप जलाएँ ऐसे
जहाँ छाए हो तम घनेरे
बूढ़ी की टूटी टपरी में
या किसी सूने चौराहे पे

उन प्रहरियों के घर जाएँ
सरहद पे कफ़न बाँध डटे
या देश के नाम शहीद हुए
दीपों से जगमग कर आएँ

जा करके गरीब बस्तियों में
घर उनके भी रोशन कर दें
पटाखे,अनार व मिठाई से
नन्हे मासूमों को बहला दें

अनाथ व वृद्ध आश्रमों में
मुरझायों को मुस्कान देदें
दरकार नहीं दीपों की उन्हें
बस थाम हाथ बातें कर लें

सुशिक्षा का ऐसा दीप हो
जो दुर्गुणों का दहन करें
संस्कारित सब संतानें हो
अस्मिता बेटियों की बचे

मिटे गरीबी आए समृद्धि
हर हाथ में दाल रोटी हो
व सर पे ख़ुद की छत हो
हरा-भरा अपना देश हो

बैर द्वेष ईर्ष्या भूलकर के
सबको अपने गले लगाएँ
सारे सेवाकर्मियों के संग
सहयोग का हाथ बढ़ाएँ

रोशन दीपों की ऊष्मा से
हर क्रूर वायरस भस्म हो
धरती के ये देवताओं की
दीपों से हम आरती उतारें





सरला मेहता
इंदौर



शुभ दीपावली

तिमिर घना है अंतर्मन में,
उजियारे की अभिलाषा रख,
घोर निराशा हो जीवन में,
पाखंडी से मत आशा रख ।

तम के यम को दूर भगाकर,
अंतस में उम्मीद जगा रख,
मुश्किलें सब यूँ दूर होगी,
भरोसा अपने पर बना रख ।

खास बनाना है यदि जीवन,
यश,वैभव और कीर्ति पास रख,
अंतस का तम मिट जाएगा,
उजालों का मन में वास रख ।

द्वार आई शुभ दीपावली,
मन से ईर्ष्या, द्वेष दूर रख,
होगी पूरी मनोकामना,
आस्था हृदय में जरूर रख ।



नलिन खोईवाल
इंदौर म. प्र.



गीत

इक त्योहार करो

आने वाले हर पल का तुम
आगे बढ़ सत्कार करो
रोज़ तुम्हें जो दिन मिलता है
उसको इक त्योहार करो।

जागी जागी आशाएं हो
मन में हो विश्वास बड़ा
जब लेना हो निर्णय कोई
रखना अपना हृदय कड़ा।
मिल जाएगी मंज़िल तुमको
तन मन मत बीमार करो
रोज़ तुम्हें जो दिन मिलता है
उसको इक त्योहार करो ।।

कई मिलेंगे साथी ऐसे
काम तुम्हारे ना आएंगे
मीठी मीठी बातें कर के
राह तुम्हें भटकाएंगे।
ऐसे लोगों को रस्ते से
तुरत ही दर किनार करो
रोज तुम्हें जो दिन मिलता है
उसको इक त्योहार करो ।।

सही ग़लत कामों की तुमको
ख़ुद करनी पहचान यहाँ
कठिन डगर है इस दुनिया की
करनी है आसान यहाँ।
सकल जगत आलोकित होगा
कुछ ऐसा उजियार करो
रोज तुम्हें जो दिन मिलता है
उसको इक त्योहार करो ।।

जो भी वक़्त मिला है तुमको
मिले नहीं वो दोबारा
काम करो तुम ऐसा जग में
याद करे फिर जग सारा।
रूप मिला है इंसा का तो
उसे सही साकार करो
रोज तुम्हें जो दिन मिलता है
उसको इक त्योहार करो ।।





सुरेन्द्र व्यास 'सरल'
इंदौर



आएगा आसो माह

आएगा आसो माह इन्तजार करते हम गुजराती
नवली नवरात्रि में गरबा खेलते हम गुजराती
मां आघ शक्ति की आराधना करते हम गुजराती
ताल से सबके साथ गरबा खेलते हम गुजराती

ए हालो हालो... गरबा में आवाज कर जोश देते
रंग-बिरंगे चनिया चोली और हाथों में डांडिया
पारंपरिक वस्त्र के साथ पारंपरिक आभूषण
समय के साथ थोड़ा सा फेशन भी करते

पर.....

वहीं पारंपरिक गरबा गीत सुनते ही....
तीन ताल, दो ताल, दोढीया, टिमली खेले गुजराती
नन्हे बच्चे हो या युवा या हो किसी भी उम्र के
पर नवरात्रि में गरबा खेलते झुमके
और दशहरे को फाफडे जलेबी खाते

दशहरा यानि अधर्म पर धर्म का विजय
भगवान श्री राम ने किया रावण का वध
मां अंबा ने किया महिषासुर का नाश
हर त्योहार आनंद के साथ संदेश देते।



मितल टिलवा
गुजरात



बीते पल की बात...

एक त्योहार का ज़माना,
खुशियों का बड़ा नज़राना।
लगते थे खुशी के मेले,
कोई न रहे घर में अकेले।

अमीर हो या चाहे गरीब,
सबकी ही अपनी थी रीत।
रचते सब सपने सुहाने,
मिलकर खुशियाँ मनाने।

सीधा-सादा मकान,
मिलकर करते रंग-बिरंगा काम।
ज़िम्मेदारी सब उठाकर,
भोग लगा खाते पेट भरकर।

दशहरा हो या दीवाली,
हर घर में थी खुशहाली।
कर सम्मान बड़ों का,
आँगन झूमे नन्हे लालों का।

अब तो त्योहार भी लगे फीका,
घर बेटे-बहू आने का मौका।
अपने बन गए अब मेहमान,
मेहमान तो दूर से ही शुभगान।

खुशियों की परिभाषा बदल गई,
'हम' से 'मैं' की राह निकल गई।
दिखावे का साज सज गया,
खर्चा ज़्यादा, पर सुख कम हो गया।



मंगेशकुमार आवारी
महाराष्ट्र

माँ कुष्मांडा

(शक्ति वंदन)

एक हाथ तेरे धनुष विराजै,
दूजे में जपमाला है।
तीसरे कर में कमल सुशोभित,
माँ का रूप निराला है॥

चौथे हाथ गदा धारण कर,
माँ कुछ ऐसे समझातीं।
शस्त्र बिना नारी असुरक्षित,
शस्त्र ही है सच्चा साथी॥

शस्त्रहीन द्रौपदी की लज्जा,
दुःशासन ने उतारी थी।
भरी सभा में अर्धनग्न कर,
खींची उसकी साड़ी थी॥

शस्त्र रहित सीता माँ छलकर,
रावण ले गया कुटी से हरकर।
बिलख बिलख कर रोती जानकी,
लंका में खुश हो गया रखकर॥

माँ कूष्मांडा शस्त्र धारण कर,
नारियों को समझाती हैं।
स्वयं सुरक्षा करो आपनी,
रक्षा कवच दिखाती हैं॥



कृष्णा गौतम
ग्रेटर नोएडा

शुभ दीपावली

नेह के दीप जो हम जला न सके,
तो दिवाली दिवाली नहीं।
आपसी द्वेष को हम मिटा न सके,
तो दिवाली दिवाली नहीं ॥

लाख दीये जलाकर करें रोशनी,
चाँद सा घर अगर जगमगाने लगे।
हम अंधेरे में एक दीप रख न सके,
तो दिवाली दिवाली नहीं ॥

किसके घर में नहीं जल सके शुभ दिए,
कितनी आँखों ने चुपचाप आँसू पिए।
किसके झालर की एक भी लगी न लड़ी,
किसके बच्चों ने छोड़ी नहीं फुलझड़ी ॥

हम चिरागों से आँगन सजाने लगे,
तो दिवाली दिवाली नहीं।
आपसी द्वेष भी जो मिटा न सके,
तो दिवाली दिवाली नहीं ॥

कौन निर्दोष घर से खदेड़ा गया,
किसपे आरोपों का चल पड़ा सिलसिला।
कौन अश्रु बहा कर खड़ा रो रहा,
दैव तू ही बता ये क्यूँ हो रहा ॥

छीन कर मुँह का गस्सा जो खाने लगे,
तो दिवाली दिवाली नहीं।
आपसी भेद जो हम मिटा न सके,
तो दिवाली दिवाली नहीं ॥

पोंछ दें आँसुओं को दें सबको खुशी,
हम अंधेरे में जाकर करें रोशनी।
जगमगाती दिवाली तभी शुभ लगे,
सबके होठों पे हो एक मधुरिम हँसी ॥



कृष्णा गौतम
ग्रेटर नोएडा

माँ दुर्गा के नौ रुप

माँ दुर्गा के नौ रूपों का,
नवरात्रि में हम करते वंदन।
प्रत्येक स्वरूप की महिमा का,
संक्षिप्त यहाँ है वर्णन ॥

प्रथम दिवस माँ शैलपुत्री का,
निर्मल स्वरूप अति प्यारा।
एक हाथ में पुष्प कमल का,
दूजे में त्रिशूल है धारा ॥
नन्दी बैल पर सवार माँ का,
पावन अति यह दर्शन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

द्वितीय दिवस माँ ब्रह्मचारिणी के,
रूप ने मोहित कर डाला।
एक हाथ में सजे कमण्डल,
दूजे में रुद्राक्ष की माला।
नँगे पैर ही आकर के,
माता ने दिये हैं दर्शन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

दश भुजी माता के मस्तक,
सोहे उज्ज्वल चन्दा।
इस स्वरूप का इसलिये,
नाम है चन्द्रघँटा।
सिंह पे सवार पावन स्वरूप का,
तृतीय दिवस हो पूजन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

मन्द हास्य से जिनके,
निकला ब्रह्मांड, ज्यों अंडा।
आदिशक्ति माँ अष्टभुजी,
अब कहलायीं कुष्माण्डा।
चतुर्थ दिवस कुम्हड़े की बलि से,
होता माँ का अर्चन् ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

एक भुजा में स्कन्द विराजे,
दूजे में कमल सुहाये।
एक भुजा बनी वरदायिनी,
दूजी है कमल उठाये।
शुभ्रा, पद्मासना स्कन्दमाता का,
पँचम दिवस करते पूजन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

चतुर्भुजी, माँ स्वर्ण वर्णा,
कात्यायनी कहलाये।
एक भुजा में खड़ग विराजे,
दूजे में कमल सुहाये।
सिंह पर सवार माँ के स्वरूप का,
छठे दिवस हो पूजन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

काला वर्ण और बिखरे बाल.
त्रिनेत्र, स्वरूप विकराल।
विद्युत सी चमके गले में माल.
डरता जिनसे स्वँय यह काल।
सप्त दिवस माँ कालरात्रि का,
करते सभी हैं वंदन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

गौरवर्णा, श्वेताम्बरा,
माँ चतुर्भुजी, वृषवाहना।
शँख, चन्द्र, कुन्द पुष्प से,
दी जाती है, जिनको उपमा।
अष्टवर्षा महागौरी का,
अष्ट दिवस करते पूजन ॥
माँ दुर्गा के नौ रूपों का.....

अष्ट सिद्धियों की यह दाता,
पद्मासन इन्हें है भाता।
शँख, चक्र, गदा सुशोभित,
एक हाथ कमल सुहाता।
नवम् दिवस माँ सिद्धिदात्री का,
श्रद्धा से करते पूजन ॥

माँ दुर्गा के नौ रूपों का
नवरात्रि में हम करते वंदन ॥



साधना शर्मा
गुड़गांव, हरियाणा

संगत का रंग

गलत लोगों के बीच रहना
शुरू में कभी कठिन नहीं लगता,
धीरे-धीरे उनकी बातों का रंग
हमारे विचारों पर उतरता है—
और एक दिन पता चलता है,
कि हम बदल गए हैं
और हमें इसका एहसास भी नहीं हुआ।
इसलिए जीवन में वही साथ चुनो,
जिसके साथ चलते हुए
अपने आप से दूर न होना पड़े;
जिसकी संगति में
तुम्हारा विवेक जागता रहे,
तुम्हारे संस्कार जीवित रहें,
और तुम्हारी आत्मा
अपने ही प्रकाश में चमकती रहे।
पर मनुष्य को पहचानना
इतना सरल भी कहाँ है!
चेहरे पर मुस्कान हो सकती है,
शब्दों में मिठास हो सकती है,
ज्ञान की ऊँची बातें हो सकती हैं—
लेकिन मन के भीतर
कौन-सी दुनिया बसी है,
यह समझना
कभी-कभी जीवन भर भी आसान नहीं होता।
इतिहास के पन्ने खोलो—
लंकेश्वर रावण
महान शास्त्रज्ञ था,
वेदों का ज्ञाता था;
फिर भी अहंकार ने
उसके ज्ञान पर पर्दा डाल दिया।
कंस शक्तिशाली था,
दुर्योधन वीर और प्रभावशाली था,
कर्ण महान दानी था—
फिर भी जीवन के कुछ निर्णय,
कुछ निष्ठाएँ,
कुछ संगतियाँ
उन्हें ऐसे मार्ग पर ले गईं
जहाँ उनके महान गुण भी
उनकी भूलों को रोक न सके।
यही तो मनुष्य का रहस्य है—
कोई पूर्ण देवता नहीं,
कोई केवल दोषों से बना नहीं;
हर मनुष्य के भीतर
प्रकाश भी है, अंधकार भी।
इसलिए किसी को पहचानने से पहले
उसके शब्दों से अधिक
उसके कर्मों को देखो;
उसकी प्रसिद्धि से अधिक
उसके व्यवहार को देखो;
और सबसे अधिक यह देखो—
उसके साथ रहकर
तुम स्वयं क्या बन रहे हो।
यदि किसी की संगति से
हृदय में करुणा बढ़े,
विचारों में पवित्रता आए,
सत्य के प्रति श्रद्धा जागे,
और मनुष्य के प्रति प्रेम बढ़े—
तो ऐसी संगति
ईश्वर के आशीर्वाद से कम नहीं।
और यदि किसी के निकट रहकर
तुम्हें अपने विवेक को चुप कराना पड़े,
अपने संस्कारों से समझौता करना पड़े,
या स्वयं की आत्मा से
आँखें चुरानी पड़ें—
तो थोड़ी दूरी
कभी-कभी संबंध तोड़ना नहीं,
स्वयं को बचाना होती है।
जीवन की राह में
हर हाथ पकड़ना आवश्यक नहीं,
हर मुस्कान पर विश्वास करना
आवश्यक नहीं,
हर परिचित को अपना बनाना भी
आवश्यक नहीं।
क्योंकि—
संगत केवल साथ नहीं होती,
संगत धीरे-धीरे संस्कार बन जाती है;
और संस्कार ही
एक दिन मनुष्य का चरित्र लिखते हैं।
इसलिए साथ उसी का चुनो
जिसके साथ चलते हुए
तुम्हारा सिर झुके नहीं,
तुम्हारा विवेक सोए नहीं,
तुम्हारे संस्कार मिटें नहीं—
और सबसे बढ़कर,
तुम्हें स्वयं से दूर न होना पड़े।

डॉ. मदन चन्द्र करण



विजयादशमी

विजयादशमी का पर्व,
मना रहे हम आज ,
रावण के वध का उत्सव,
मना रहे हम आज ।

रावण एक प्रकान्ड पंडित,
चारों वेदों का ज्ञाता जो,
बहन के प्रेम में अन्धा हो कर,
भावनाओं में बह गया जो,
साधु का वेश धारण कर,
सीता को हर लाया जो,
अपनी कैद में रख कर भी,
मर्यादा नहीं भूला जो,
अपमान की आग में जल के भी,
सीता को नहीं लगाया हाथ ।

विजयादशमी का पर्व,
मना रहे हम आज ।।

विजयादशमी का उत्सव क्यों?
है रावणों का राज जो,
आतंकवाद का रावण करता,
दुनिया पर अट्टाहस जो,
भ्रष्टाचार का रावण करता,
देश समाज का नाश जो,
वासना का रावण करता,
नारी का अपमान जो,
जन जन को "राम" बनने का,
संकल्प लेना है आज ।

विजयादशमी का पर्व,
मना रहे हम आज ।।



साधना शर्मा
गुड़गांव, हरियाणा

शुभ दीपावली

प्रकाश उत्सव का समय,
स्वदेश सारा दीपमय ।
विशाल अपनी भारती,
सुदूर तक शुभ आरती ।।

गणेश जी का आगमन,
अनंत दोषों का दमन ।
सँवारतीं कमला सदन ,
उड़ेल देतीं अन्नधन ।।

अभीष्ट फल की भावना,
सुपर्व की शुभकामना ।
कुबेर जी से याचना,
विशाल वैभव बाँटना ।।

निरोग तन हो आपका,
नगण्य ऋण हो पाप का ।
कलेश दुविधा सब मिटे,
विवेक बल प्रतिदिन बढ़े ।।



जगदीश शर्मा सहज
अशोक नगर



ग़ज़ल

अल्फाज़ प्यार वाले नफ़रतों में ढल गये
मेरे शहर के लोग भी कितने बदल गये

इस दौर में मंज़र है यहाँ कोई भी मुमकिन
साक़ी शराब देख के साधू मचल गये

इक बार जो गिरे तो वो गिरते चले गये
अब ऐसे नहीं लोग कि गिर के सँभल गये

वादा सुकूँ का करके वो छीनेगा इत्मिनान
कुछ ऐसे वाक़ए ही थे जो हमको खल गये

ऐ 'हर्ष' शहर छोड़ कोई दूजा ठौर ढूँढ
बद्रीयती से लोगों की पत्थर दहल गये

ग़ज़ल

काँच की गुड़िया भी पत्थर से उलझती देखी
आग बारिश में सरे आम सुलगती देखी

नाज़ जिन लोगों पे दुनिया को हुआ करता है
चाल उन क़दमों की हमने तो बहकती देखी

गुल को छूने से भी जिन हाथों में उभरे छाले
आज उन हाथों में शमशीर चमकती देखी

'हर्ष' जो दिन के उजाले में लुटाए ख़ुशियाँ
ग़मजदा शाम, तो रात उनकी सिसकती देखी



अरविन्द मिश्र 'हर्ष'
वाराणसी

अहंकार

प्रकांड था ज्ञाता
आराधक महान,
रुद्र महाकाल का
करता था ध्यान,
प्राप्त थे शिव से
शक्ति के वरदान,
समृद्धि वैभव में न
उसके कोई समान,
कुल श्रेष्ठ का भी
था उसको मान,
सोने की लंका की
चहुँ और थी शान,
उसकी शक्ति का
सब लेते लोहा मान,
महाबली था वो
भरे पड़े प्रमाण,
भक्ति में जब भी वो
छेड़ता था तान,
भूल जाता था
निज देह का भान,
ओजस्वी थी काया
कंचन सा रूपवान,
ऐसे गुणी रावण का
क्यूँ मर्दन हुआ मान..!

रूपवती सीता पर
मोहित हुआ अपार,
कपट से कराई उनको
लक्ष्मण रेखा पार,
विषयों में अंधा होकर
देखा न सदाचार,
विनय विवेक के
भूल गया संस्कार,
प्रकांड उस ज्ञानी के
मन में बुरे विचार,
विपरीत अपनी छवि के
कर उठा कदाचार,
अधर्मी बन धर्म को
दी उसने ललकार,
निरंकुश बनकर वो
कर उठा अत्याचार,
शुद्ध थे विचार कभी
अब मन में व्याभिचार
सब कहते श्रीराम ने
उनका किया संहार,
नहीं हुई थी दानव की
राम के हाथों हार,
जिसने मिटाया रावण को
वो था उसका अहंकार..!



जैन राजेंद्र गुलेच्छा 'राज'
बेंगलूरु

दीपावली का पर्व

आशाओं के दीप करके प्रज्वलित,
दूर करो हृदय का तिमिर,
मधुर क्षणों का करके संग्रह
जीवंत करो अपनों का शिविर,
दीपावली में फैलता है सर्वत्र प्रकाश,
चहूँ तरफ रहता है प्रेम और विश्वास,
दीपों की श्रृंखला है रोशनी से भरपूर,
हृदय तमस को सदैव करती दूर,
प्रार्थना है इस पवित्र पर्व पर हो ऐसा संयोग,
खुशियों और सौहार्द का हो आगमन
प्रत्येक गृह में वास करें प्रेम और सहयोग,
रात्रि में धरती का ऐसा स्वर्णिम स्वरूप,
अंधेरे को पराजित करे प्रकाश स्वरूप,
प्रेम भरे हृदय करते है कामना,
दियों की रोशनी से दूर हो अंधकार की वेदना,
माता लक्ष्मी और गणपति जी की करें पूजा अर्चना
दीपावली पर होती है सर्व मंगल कामना।



रिचा आनंद
भारत



गीत

पर्यावरण संतुलित होगा तभी यहां सुख शांति मिले

पर्यावरण संतुलित होगा, सुख-शांति घर आएगी,
हरियाली की मधुर छटा, जीवन में रंग लाएगी ।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ, धरती को सजाएँ,
सूनी-सूनी राहों में हम, हरियाली फैलाएँ ।

नदियाँ निर्मल, जल हो शीतल, यही हमारी शान,
जल की हर बूँद बचाएँ हम, यही हमारा मान ।

शुद्ध हवा जब साँसों में हो, मन भी खिल-खिल जाए,
नीला-नीला स्वच्छ गगन हो, खुशियों का रंग छाए ।

कूड़ा-कचरा दूर भगाएँ, स्वच्छ धरा बनाएँ,
प्लास्टिक का उपयोग घटाकर, सुंदर जग रचाएँ ।

वन, पर्वत और नदियाँ बचें, बचें सभी जीव-जंतु,
प्रकृति रहे जब स्वस्थ हमारी, सुखी रहें सब प्राणी ।

धरती माँ का ऋण चुकाना, अपना धर्म बनाएँ,
आने वाली पीढ़ी को हम, हरित धरोहर दे जाएँ ।

पेड़ बचेंगे, जल बच पाएगा, जीवन मुस्कुराएगा,
प्रकृति सँवरेगी जब जग में, सुख का दीप जलाएगा ।

आओ मिलकर शपथ ये लें, प्रकृति नहीं मिटाएँगे,
पर्यावरण संतुलित करके, सुख-शांति हम पाएँगे ।



डॉ. शंकर घनशामदास अंदानी
अहिल्या नगर

ग़ज़ल

ग़ज़ल की चाशनी बन कर तिरी गुफ़्तार में आए
असर ऐसा कि हर कोई तिरे दरबार में आए

सर ए तस्लीम ख़म है जो मिज़ाज ए यार में आए
यक़ीं है वो नवाज़ेंगे, भले इंकार में आए

जला दी हस्ती-ए-फ़ानी, इसी उम्मीद पर मैंने
कि शायद ज़िक्र मेरा भी, किसी इक़रार में आए

यक़ीं है उठ ही जाएगा, हरिक पर्दा हक़ीक़त से
मिरा महबूब जिस दिन भी, नए असरार में आए

इसी उम्मीद से उसकी गली की ख़ाक छानी है
कि शायद यार का जलवा, मेरे दीदार में आए

वफ़ा की क़ीमतें लगने लगी हैं अब ज़माने में
कहाँ से ख़्वाब ये बिकने नए बाज़ार में आए

बदलना है तो फिर ख़ुद को मुकम्मल ही बदल डालो
ज़माने को तेरी ख़ूबी नज़र किरदार में आए

बनाई दर्द की हम ने यहाँ ऐसी भी इक बस्ती
कि जिस में दाग़ अब कोई नहीं दीवार में आए

ग़म-ए-दिल को छुपाना ही, मुनासिब है मियाँ 'क़ाज़ी'
ख़ुशी की बात ही सब को नज़र अशआर में आए



डॉ. वासिफ़ काज़ी
इंदौर

विजयदशमी

आओ विजयदशमी का पर्व मनायें,
अपने अंदर के अहंकार को मिटायें।
दहन पुतलों का ही नहीं ,बुराई का करना होगा,
श्री राम की प्रेरणा सेअधर्म से लड़ना होगा ।।

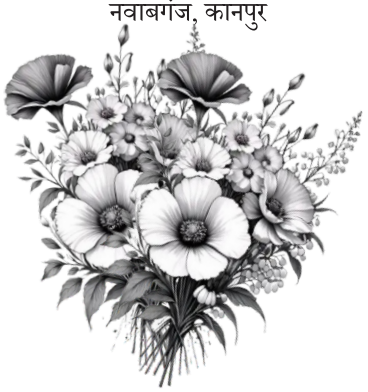
विजयदशमी को ही दशहरा मनाते हैं,
आज के दिन असत्य पर सत्य की जीत हुई।
श्री राम ने रावण को मार कर,
संसार को धर्म की सीख दी ।।

रावण शिव का परम भक्त ,था बहुत ज्ञानी,
सीता हरण पर नहीं हुई उसे आत्मग्लानि।
श्री राम को ललकारा , पर नहीं किसी की मानी,
दशानन अपने आप में था बहुत अभिमानी ।।

विजय दशमी का पर्व भाईचारे को,
सीता जी के प्रति राम के सम्मान को।
नारी के आदर और स्वाभिमान को,
अन्याय पर न्याय की जीत को देता है मान ।।



भारती कुमार
नवाबगंज, कानपुर



पूजा के पार

मैं स्त्री हूँ,
मैं बेटी रूप में हूँ,
मैं माँ रूप में हूँ,
मैं बहन रूप में हूँ,
मैं पत्नी रूप में हूँ,
मैं कई रूपों मे हू।
मैं निरंतर बहना चाहती हूँ
जीवन की लहरों में,
साँस लेना चाहती हूँ
मस्त आज़ाद हवाओं में,
और प्रेम देना चाहती हूँ
प्रकृति के हरे-भरे आँचल में।
मेरा श्रृंगार तो
मेरे गुण हैं,
लेकिन मुझे रौनक मानकर
घर की सजावट बना दिया है,
मंदिर में देवी बनाकर
सजा दिया है।
जहाँ मेरे लिए
दीपक की अग्नि के रूप में
मौन संघर्ष है,
पायल, बिंदिया की जंजीरें हैं,
और ममता के नाम पर
आजीवन तपस्या,
जिसके हवन में
जल जाते हैं मेरे सपने।
मुझे बंद दीवारों में
पूजने का सौभाग्य तो मिला,
लेकिन समाज में
सम्मान नहीं मिला।
अब नवरात्रि में
मुझे कन्या बनाकर
पूजन नहीं चाहिए,
न मुझे दीवाली में
लक्ष्मी के रूप में
सजकर पूजन चाहिए।
मुझे तो बस
इतना चाहिए—
मेरे अस्तित्व का सम्मान,
मेरे सपनों की स्वतंत्रता,
और अपने जीवन की सरिता में
स्वतंत्र होकर बहने का अधिकार।
मैं स्त्री हूँ, मुझे पूजा नहीं,
मुझे सम्मान चाहिए,
मुझे अपने जीवन की
स्वतंत्रता चाहिए।





अनीता चमोली 'अनू'
देहरादून (उत्तराखंड)



माँ

ईश्वर से भी जो बड़ी,
वह है मां की शक्ति !
प्रेरणा मां से मिली,
मां पर ही अभिव्यक्ति !!

बैठी हो मन के मंदिर में
पैठी हो गहरी अंदर में
बहती हो मेरी नस-नस में
पाला हो जिसने हंस-हंस के
वह और नहीं - मां - होती है
हम सबकी आत्मा होती है
फिर एक दिन, बतलाए बिन
वह इतनी.. दूर चली जाए
कि लौट कभी ना घर आए
तब पूछो उसके बेटों से
पति से और बेटियों से
घर की नींव, चोटियों से
क्या- क्या नहीं गुजरती है
मानो दुनिया ही उजड़ती है
फिर भी जीना पड़ता है
पर जीवन भर अखड़ता है
जाता है उजड़ वह खिला चमन
खो जाता है सब चैन- अमन
जो दमक रहा था मां के संग
अब उस प्रताप का हुआ दमन
स्मृति में अभी नाचता वह
श्वेत- श्वेत सा धवल कफ़न
स्मृतियाँ ही अब, शेष बचीं
मां की, उस मां को मेरा नमन
उस मां को शत-शत बार नमन



प्रताप सिंह
मल्लावां
जनपद- हरदोई
उत्तर प्रदेश

मैया का दरबार

देखो आए मैया के नवराते,
सजा है मैया का सुंदर दरबार।

मैया के माथे लाल बिंदी चमके,
मैया का मुख दम दम दमके।
मैया के पैरों में पायल बाजे,
और मांग सिंदूर विराजे।
पैरों में मैया के लगी है महावर,
मैया का सजा है सुंदर दरबार।

मैया के हाथों चूड़ा छनके,
कमर मैया के तगड़ी दमके।
मैया की साड़ी भी है लाल,
मैया की चुनरी लग रही कमाल।
मैया का जच रहा सोलह सिंगार।
सजा है मैया का सुंदर दरबार।

आई हूं मैया मैं तेरे द्वार,
सुन ले मैया मेरी पुकार।
कर दे मेरे दुखड़े दूर,
लगा दे मेरा बेड़ा पार।
सजा है मैया का सुंदर दरबार।



लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा (बुलंदशहर), उत्तरप्रदेश



लक्ष्य विहीन पथ

रिश्तों की चिमनियां बुझाकर
खुशियां बाँटने का हुनर
न जाने कहाँ से सीख आए
मूल्य विहीन लक्ष्य के पथ पर
मानव क्यों
प्रलय की ओर अग्रसर है ?

पाशविकता यहाँ चरम पर है
और आस्था के प्रश्न
भौतिक हो गए हैं
सुलगते प्रश्नों की कई पोटलियाँ
बरगद की तरह
फैलती ही जा रही है

उम्र अब विश्वास की
चुकने लगी है
हारता है कौन, जीतता है कौन ?
भीड़ कर रही निर्णय सारे
मानवता पर हावी
पशुता के नश्तर
आखिर कब तक चुभते रहेंगे ?

हमारी सभ्यता-संस्कृति के रहस्य
जब तक मुखर हो,
सत्य नहीं बोलेंगे
प्रश्नों के दरवाजे पर लगे ताले
जब तक नहीं टूटेंगे
धर्मग्रंथों का कोई शब्द
नपुंसक आज़ादी की
लँगड़ी टाँगे तोड़ेगा
तब सभ्यता का सफर होगा पूरा !



राजकुमार जैन राजन
आकोला, राजस्थान

करवाचौथ : श्रृंगार से संस्कार तक

शिखा अग्रवाल
देहरादून, उत्तराखंड



करवाचौथ की पावन बहार,
भर दे दिलों में प्यार ही प्यार।
प्रेम ने रचा अनुपम संस्कार,
खुशियाँ थिरकें हर आँगन परिवार।
शीतल चाँद के करके दीदार,
महके तन मन में प्रेम अपार।
सजनी करे सोलह श्रृंगार,
सौभाग्य से सजाये जीवन संसार।

करवाचौथ भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख पर्व है, जो सदियों से प्रेम, विश्वास, आस्था और दांपत्य समर्पण की सुंदर परंपरा को अपने भीतर समेटे हुए है। सामान्यतः इस दिन विवाहित महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु, सुख-समृद्धि और स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए सूर्योदय से चंद्रोदय तक व्रत रखती हैं। चंद्रमा के दर्शन और पूजा के बाद पति के हाथों जल ग्रहण कर व्रत खोलने की परंपरा इस पर्व को भावनात्मक रूप से और भी विशेष बना देती है।

लेकिन करवाचौथ केवल एक व्रत नहीं है। इसके पीछे रिश्तों की एक पूरी दुनिया छिपी है—पति-पत्नी का प्रेम, सास-बहू का स्नेह, माँ-बेटी का जुड़ाव, बड़ों का आशीर्वाद और परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखने वाली हमारी सांस्कृतिक परंपराएँ। बदलते समय के साथ करवाचौथ का स्वरूप भले ही बदला हो, लेकिन इसके मूल में आज भी प्रेम और संबंधों को मजबूत करने की भावना विद्यमान है।

परंपरागत रूप से करवाचौथ पर सास अपनी बहू को प्रातः सरगी देती है, जिसमें भोजन, फल, मिठाई और अन्य सामग्री होती है। यह केवल व्रत के लिए भोजन उपलब्ध कराने की परंपरा नहीं, बल्कि सास की ओर से बहू के प्रति स्नेह और आशीर्वाद का प्रतीक है। इसी तरह विवाहित महिलाएँ करवाचौथ के दिन अपने सास-ससुर और परिवार के अन्य बड़ों को बायना या उपहार देकर उनका आशीर्वाद लेती हैं। यह परंपरा हमें याद दिलाती है कि भारतीय त्योहार केवल पति-पत्नी के रिश्ते तक सीमित नहीं होते, बल्कि पूरे परिवार को जोड़ने का माध्यम होते हैं।



करवाचौथ के अवसर पर महिलाएँ अपने बड़ों को प्रणाम कर, उनका आशीर्वाद लेती हैं और परिवार के साथ पूजा-कथा में शामिल होती हैं। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में जहाँ परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए समय कम होता जा रहा है, वहाँ ऐसे अवसर रिश्तों को फिर से जोड़ने का काम करते हैं। एक प्रणाम, एक आशीर्वाद और कुछ आत्मीय शब्द कई बार रिश्तों में गर्माहट लौटा देते हैं, जो रोजमर्रा की व्यस्तता में कहीं खो जाती है।

हालाँकि समय के साथ करवाचौथ की परिभाषा भी बदल रही है। पहले इसे मुख्यतः पत्नी द्वारा पति की लंबी उम्र के लिए रखे जाने वाले व्रत के रूप में देखा जाता था। आज कई पति भी अपनी पत्नी के साथ व्रत रखते हैं या किसी अन्य रूप में उसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान व्यक्त करते हैं। यह बदलाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि आधुनिक दांपत्य जीवन केवल एक व्यक्ति के त्याग पर आधारित नहीं, बल्कि परस्पर सहयोग और साझेदारी पर टिका है।

आज की महिला शिक्षित है। रोजगार, व्यवसाय और सामाजिक जीवन में बराबरी से आगे बढ़ रही है। वह घर संभालने के साथ-साथ परिवार की

आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारियों में भी अपना योगदान दे रही है। इसलिए आधुनिक करवाचौथ में पति का भी यह दायित्व है कि वह पत्नी के त्याग को समझे, उसके सपनों का सम्मान करे और उसके जीवन के संघर्षों में उसके साथ खड़ा रहे। इसी तरह पत्नी के लिए भी पति के प्रति सम्मान और उसके संघर्षों को समझना रिश्ते की मजबूती का आधार है।

इस दृष्टि से करवाचौथ अब केवल "पति की लंबी उम्र के लिए पत्नी का व्रत" नहीं रह गया है। यह एक-दूसरे के सुख, स्वास्थ्य, सम्मान और साथ की कामना करने का अवसर भी बन सकता है।

लेकिन आधुनिक करवाचौथ का एक दूसरा पक्ष भी है—सोशल मीडिया और दिखावे की संस्कृति। आज करवाचौथ से कई दिन पहले ही बाजारों में रौनक दिखाई देने लगती है। नई साड़ियाँ, गहने, मेहंदी, मेकअप और विशेष फोटोशूट इस पर्व का हिस्सा बन गए हैं। महिलाएँ अपने सजने-संवरने की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा करती हैं। अपने उत्सव की खुशी दूसरों के साथ बाँटना गलत नहीं है, लेकिन जब यह खुशी तुलना और प्रदर्शन में बदलने लगे, तब पर्व की मूल भावना कहीं पीछे छूट सकती है।

किसकी साड़ी अधिक महंगी है, किसके गहने अधिक आकर्षक हैं, किसका फोटोशूट बेहतर है या किसने करवाचौथ किसी भव्य स्थान पर मनाया- यदि हमारी चर्चा इन बातों तक सीमित हो जाए, तो हमें सोचना होगा कि कहीं हमने पर्व की आत्मा को तो नहीं खो दिया।

आधुनिकता के इस दौर में करवाचौथ हमें अपनी जड़ों, प्रकृति और मौलिक संवेदनाओं की ओर लौटने का अवसर भी देता है। मिट्टी का पारंपरिक करवा केवल पूजा का एक साधन नहीं, बल्कि हमारी माटी की सोंधी महक, सादगी और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली का प्रतीक है। आज जब उत्सवों पर बाजारीकरण हावी हो रहा है, तब मिट्टी के दीयों और करवों का प्रयोग स्थानीय कुम्हारों और हस्तशिल्पियों को संबल देने के साथ-साथ पर्व में सात्विकता भी घोलता है।

इसके साथ ही, आज के दौर में करवाचौथ का एक और महत्वपूर्ण पहलू है—रिश्तों में खुला संवाद। कई बार भागदौड़ भरी जिंदगी में मनमुटाव, अपेक्षाएँ और मौन रिश्तों के बीच दीवार बन जाते हैं। यह पर्व निर्जल रहने के साथ-साथ मन के मौन को तोड़ने और पुरानी कड़वाहटों को भुलाकर एक-दूसरे को सुनने-समझने का दिन बने। वहीं, यदि स्वास्थ्यगत कारणों से कोई कठिन व्रत न भी रख पाए, तो भी आस्था और प्रेम में कोई कमी नहीं आती। आस्था का वास्तविक सौंदर्य शरीर को कष्ट देने में नहीं, बल्कि मन में एक-दूसरे के प्रति सकारात्मकता, मानसिक शांति और अटूट विश्वास जगाने में है।

करवाचौथ पर बाहरी सौंदर्य को निखारने के साथ-साथ हमें अपने आंतरिक सौंदर्य को भी सँवारना चाहिए। सुंदर वस्त्र, आभूषण और श्रृंगार हमारे व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं, लेकिन रिश्तों की वास्तविक सुंदरता हमारे मन के भावों से जन्म लेती है। यदि मन में प्रेम, सम्मान, विश्वास, संवेदना और अपनापन होगा, तभी हम रिश्तों के मूल्यों को समझ पाएँगे और उन्हें पूरी निष्ठा से निभा पाएँगे। क्योंकि सच्चा श्रृंगार चेहरे का नहीं, मन का होता है और वही रिश्तों को जीवनभर सुंदर बनाए रखता है।

करवाचौथ की सुंदरता महंगे कपड़ों और आभूषणों में नहीं, बल्कि उस भावना में है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे के सुख और स्वास्थ्य की कामना करता है। घर में मिलकर पूजा करना, करवाचौथ की कथा सुनना, बड़ों का आशीर्वाद लेना, परिवार के साथ भोजन करना और जीवनसाथी के साथ कुछ आत्मीय क्षण बिताना—ये छोटी-छोटी बातें ही इस पर्व को विशेष बनाती हैं।

आज की व्यस्त जीवनशैली ने पति-पत्नी दोनों को अपने-अपने कार्यों में उलझा दिया है। नौकरी, व्यवसाय, बच्चों की जिम्मेदारियाँ और डिजिटल दुनिया की लगातार बढ़ती व्यस्तता के बीच कई बार एक ही घर में रहने वाले लोग भी एक-दूसरे से पर्याप्त संवाद नहीं कर पाते। ऐसे में करवाचौथ एक अवसर बन सकता है—कुछ समय मोबाइल की स्क्रीन से हटकर एक-दूसरे के सामने बैठने का, बीते समय को याद करने का और अपने रिश्ते के प्रति कृतज्ञ होने का।

इसीलिए करवाचौथ का वास्तविक अर्थ केवल निर्जल रहना नहीं है। व्रत हमें संयम, धैर्य, आत्मनियंत्रण और समर्पण का भाव सिखाता है। हालांकि हर व्यक्ति का स्वास्थ्य अलग होता है। किसी को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो तो केवल सामाजिक दबाव के कारण कठिन व्रत करना उचित नहीं। आस्था का उद्देश्य

स्वयं को कष्ट देना नहीं, बल्कि मन में श्रद्धा और सकारात्मकता उत्पन्न करना होना चाहिए।

इसी प्रकार घर में बनाए गए सात्विक भोजन के साथ परिवार का एकत्र होना भी इस पर्व का महत्वपूर्ण पक्ष है। आज कई लोग सुविधा या उत्सव के लिए होटल और रेस्तरां में जाकर व्रत खोलते हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं, यदि वह पारिवारिक सुविधा और खुशी का हिस्सा हो। लेकिन यदि बाहरी प्रदर्शन के कारण घर की आत्मीयता, पूजा और पारिवारिक जुड़ाव पूरी तरह पीछे छूट जाए, तो हमें यह अवश्य सोचना चाहिए कि हम पर्व की परंपरा को निभा रहे हैं या केवल उसका बाहरी स्वरूप।

करवाचौथ हमें यह भी सिखाता है कि रिश्ते केवल एक दिन के उत्सव से मजबूत नहीं होते। यदि उस दिन पति-पत्नी एक-दूसरे को महंगे उपहार दें, लेकिन वर्षभर एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान न करें, तो उस उत्सव का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। सच्चा करवाचौथ तो तब होगा जब पति पत्नी के सपनों को समझे, पत्नी पति के संघर्षों को समझे, दोनों एक-दूसरे की कमियों को स्वीकार करें और कठिन परिस्थितियों में साथ खड़े रहें।

आज की पीढ़ी के लिए करवाचौथ परंपरा और आधुनिकता के बीच सुंदर संतुलन बनाने का अवसर है। हम अपनी संस्कृति को भी संजो सकते हैं और उसके अर्थ को समय के अनुरूप व्यापक भी बना सकते हैं। इसमें पत्नी का प्रेम है तो पति का सम्मान भी; व्रत है तो साझेदारी भी; पूजा है तो परिवार भी; श्रृंगार है तो आत्मिक सौंदर्य भी।

अंततः करवाचौथ चंद्रमा को छलनी से देखने का पर्व भर नहीं है। यह उस रिश्ते को देखने का अवसर है, जिसे प्रेम, विश्वास, सम्मान और साथ ने वर्षों में सँवारा है। यह बड़ों के आशीर्वाद को स्वीकार करने, परिवार के साथ जुड़ने और जीवनसाथी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है।

करवाचौथ की सच्ची सुंदरता तब है, जब चाँद की रोशनी के साथ रिश्तों में भी उजाला हो; जब व्रत के साथ मन में प्रेम हो; श्रृंगार के साथ संस्कार हों और उत्सव के साथ आत्मीयता हो।



आधुनिक युग में करवाचौथ की यही नई परिभाषा हो सकती है—परंपरा को सम्मान देते हुए समानता को अपनाना, बाहरी दिखावे से अधिक आंतरिक सौंदर्य और भावनाओं को महत्व देना और एक दिन के व्रत से आगे बढ़कर पूरे जीवन एक-दूसरे का साथ निभाने का संकल्प लेना।

छोटी दीपावली

(रूप चतुर्दशी, नरक चौदस)



जगदीश शर्मा सहज
अशोक नगर

पांच दिवसीय दीपपर्व का प्रमुख त्यौहार है इसमें कार्तिक मास कृष्णपक्ष में दीपावली से एक दिन पहले रात में उसी प्रकार दीए की रोशनी से रात के तिमिर को प्रकाश पुंज से दूर भगा दिया जाता है जैसे दीपावली की रात को।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान श्रीकृष्ण की पूजार्चन करने से सुख, सौभाग्य रूप, वैभव प्राप्त होता है तथा खोई हुई वस्तु वापिस मिल सकती है अनेक लोकमान्यताएं हैं।

एक कथा के अनुसार आज के दिन ही भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी और दुराचारी दुर्दांत असुर नरकासुर का वध किया था और सोलह हजार एक सौ कन्याओं को नरकासुर के बंदी गृह से मुक्त कर उन्हें सम्मान प्रदान किया था। इस उपलक्ष्य में दीयों की बारात सजाई जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा सभी पूर्णिमाओं में श्रेष्ठ मानी जाती है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव ने देवलोक पर हाहाकार मचाने वाले त्रिपुरासुर नाम के राक्षस का संहार किया था। उसके वध की खुशी में देवताओं ने इसी दिन दीपावली मनाई थी। हर साल लोग कार्तिक पूर्णिमा के दिन देव दीपावली मनाते हैं। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार इसी दिन भगवान विष्णु ने मतस्यावतार लिया था। इस दिन गंगा समेत अन्य् पवित्र नदियों में स्नान करन पुण्यकारी माना जाता है।

आज ही के दिन सिक्खों के प्रथम गुरु गुरुनानकदेव जी का जन्म दिवस है गुरुनानक जी ने सामाजिक एकता,और एकेश्वरवाद का संदेश दिया। आज सभी गुरुद्वारों में प्रकाश पर्व मनाया जाता है दिन भर लंगर चलते हैं। गुरुग्रंथ साहब का पाठ होता है। गुरुनानकदेव जी का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पंजाब के तलवंडी ननकाना साहिब (आज के पाकिस्तान) में हुआ था।



संस्मरण

असली दिवाली

अनुपमा शर्मा
रुड़की



बात पिछले साल की है, नवरात्रि बीत चुकी थी, ठंड ने हल्की सी दस्तक दे दी थी, और दिवाली की तैयारी जोरों पर थी। हमारे उत्तर भारत में दिवाली एक ऐसा त्यौहार है जिसमें एक दिवाली खत्म होते ही अगले साल की दिवाली का इंतजार शुरू हो जाता है।



दिवाली के स्वागत में घर की सफाई का अभियान अपने अंतिम चरणों में था, इसके बाद घर की सजावट की बारी आ गई, खूब खरीदारी की गई। दिवाली की सजावट का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है घर में लाइट लगाना। सरकारी बंगला होने की वजह से घर में खूब खुला आंगन, तरह तरह के फलदार और सजावटी वृक्ष थे, जिन पर लाइट लगाई जानी थी। तैयारी के लिए घर में नौकरों की फौज भी थी। अहोई पूजा के अगले दिन सुबह ही लाइट लगाने के लिए एक टीम आ गई। पतिदेव ने कई बक्से लड़ियों के मंगवाए थे, जिनमें लाल, हरी, पीली, नीली, सफेद आदि अनेक रंगों की लड़ियां थी। सुबह से लाइट लगने का काम शुरू हो गया था और दो दिन तक चला। मैं तो इतनी लाइटें देखकर फूली नहीं समा रही थी। अभी तक किताबों में पढ़ा था तारे ज़मीन पर, लेकिन यहां तो यह प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा था। मौसम में ठंडक का एहसास और रात में पेड़ों पर झूलती लड़ियां मन में एक अलग ही ऊर्जा संचारित कर रहे थे। कई दिन, रात में बरामदे में झूले पर बैठकर मैं लाइट निहारा करती, लगता था मैं आसमान में तारों के बीच बैठी हूं और ईश्वर को बारंबार धन्यवाद करती थी कि उसने मुझे यह सौभाग्य प्रदान किया। सर्वेंट क्वार्टर वाले बच्चे भी पूरा दिन बाहर लॉन में खेलते रहते, मैं कभी उनसे बातें करती और कभी उन्हें चॉकलेट, बिस्किट वगैरा भी दे देती। कई दिन इसी तरह बीत गए और दिवाली की सुबह आ गई। सुबह से घर में गहमागहमी लगी हुई थी। कोई बाहर गेट पर फूल माला लगा रहा था, कोई रंगोली बना रहा था। पेंट वाली रंगोलिया तो पहले ही बनाई जा चुकी थी उनके ऊपर फूलों से सजावट की



जा रही थी। घर में पूजा की तैयारी चल रही थी, पूरा घर पकवानों की खुशबू से महक रहा था। खाना खाने के बाद शाम की तैयारी शुरू हो गई थी। मिट्टी के दियों को धुलाई के बाद तेल भर कर रखा जा रहा था, आंगन में मामबत्तियां चिपकाई जा रही थी जिससे शाम होते ही वह आसानी से जलाई जा सके। मैं तो सारा समय पूरी तैयारी में व्यस्त थी। सबको आदेश पर आदेश दिए जा रही थी।

लगभग 5:00 बजे का वक्त हुआ होगा मैं किसी काम से बाहर निकली तो लॉन के पास एक कोने में नितिन (सर्वेंट क्वार्टर में रहने वाला व्यक्ति) की बेटी मान्या उदास खड़ी थी, मैंने उससे उदासी का कारण पूछा तो उसने कहा कि उसके पापा के पास लड़ियां लगाने के लिए पैसे नहीं है और उसके घर में लाइट नहीं लगी है। ओह..... आसमान में उड़ते उड़ते मै जमीन पर आ गिरी।

अपनी खुशियों के बीच मुझे यह ध्यान ही नहीं आया कि उसके घर में भी लाइट लगानी चाहिए। दरअसल घरके पीछे थोड़ी दूरी पर उसका घर था जहां तक हमारी लड़ियों की रोशनी नहीं पहुंच पा रही थी। मैंने उसकी मां को मिठाई, पैसे वगैरा देकर अपनी कर्तव्य की इति समझ ली थी। मैंने तुरंत बेटे से कहकर लड़ियों के बक्से में से बची हुई लड़ियां निकलवाई और नितिन को बुलाकर उसके घर पर लगाने को कहा, जैसे ही मैने नितिन को लड़ियां दी, मान्या की आंखों में अनेक जुगनू चमक उठे और वह चिड़ियों की तरह चहकने लगी, तो मुझे एक अलग ही सुकून की अनुभूति हुई और मान्या के चेहरे की चमक के सामने उस वक्त सारी लाइटें धुंधली लगने लगी। उस वक्त मैंने महसूस किया कि अब हुई है असली दिवाली.....

स्वतंत्र अस्तित्व



शिप्रा गुप्ता

कई सालों से हम एक ही नारा सुनते आ रहे हैं कि "लड़कियाँ या महिलाएँ" लड़कों या पुरुषों के बराबर हैं।

पर महिलाएँ इसके लिए संघर्ष क्यों कर रही हैं? क्यों समाज को ये औपचारिकताएँ निभानी पड़ रही हैं कि "महिलाओं को पुरुषों के बराबर लाया जाए"? किसी भी महिला की तुलना किसी पुरुष से नहीं होनी चाहिए। ये एक कड़वा सच है। इसे पुरुषों को भी और महिलाओं को भी स्वीकार करना होगा।

महिला का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। उसकी अपनी अलग पहचान है, अपनी क्षमता है, अपनी ताकत है। फिर उसे पुरुष के नाम की बैसाखी की क्या जरूरत है? प्रकृति ने सबको बराबर नहीं बनाया है और अगर हम प्रकृति के खिलाफ जाएँगे तो परिणाम भुगतने ही होंगे।

हम क्यों किसी और जैसा बनना चाहते हैं? हम महान लोगों की तुलना क्यों करते हैं, जबकि उन्होंने महान और अलग-अलग काम किए हैं?

कोई भी अकेला कोई काम नहीं कर सकता। क्या कोई गाड़ी बिना पेट्रोल के चल सकती है?

फिर हम पुरुष के बिना महिला और महिला के बिना पुरुष की कल्पना कैसे कर सकते हैं? हम उनके अधिकारों के लिए लड़ते क्यों हैं और साथ ही उन्हें कमजोर वर्ग मानते हैं?

हम उन्हें समाज में ऊँचा दर्जा क्यों देना चाहते हैं, जब महिलाओं का दर्जा पहले से ही ऊँचा है?

क्योंकि तुलना हमेशा एक ही गुण और एक ही प्रकृति वाली चीजों में होनी चाहिए, विपरीत चीजों में नहीं।

महिलाओं का रूप अलग है, स्वभाव अलग है, और क्षमता अलग है जो अतुलनीय है, फिर बराबरी लाने की ये मजबूरी कैसी?

क्या हम चाँद और सूरज की तुलना कर सकते हैं? क्या किसी एक के बिना धरती पर जीवन की कल्पना की जा सकती है?

आप ये कह सकते हैं कि नदी का पानी मीठा है और समुंदर का पानी खारा है। दोनों पानी की तुलना हो सकती है, या ये सोचा जा सकता है कि खारे पानी को कैसे उपयोगी बनाया जाए।

क्या हवा और पानी को एक जैसा माना जा सकता है? दोनों ही जीवन के लिए जरूरी हैं और दोनों में से किसी एक के बिना भी जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। प्राचीन काल में एक ऐसा दौर भी आया जब महिलाओं को अछूत समझा गया। लेकिन उन्हें ऋग्वैदिक काल में अपना सम्मान वापस मिला।

बस उनके महत्व को समझने में ही कमी है। महिलाओं के लिए सीमाएँ तय कर दी गई हैं और पुरुष कहीं न कहीं तानाशाह बनते जा रहे हैं।

क्योंकि पुरुषों ने अपने नियम और कानून खुद बनाए हैं और कहीं न कहीं महिलाएँ भी ये मानने लगी हैं कि वे पिछड़ा और कमजोर वर्ग हैं और अब उन्हें पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है।

ये अलग बात है कि समय के बदलाव के कारण आज जरूरतें और आवश्यकताएँ बदल गई हैं, जिस वजह से महिलाओं को बड़ी संख्या में बाहर काम करना पड़ रहा है और समाज में उन्हें महत्व मिलने लगा है।

ये सिर्फ समय के बदलाव का एक हिस्सा है, इसे तुलना नहीं माना जा सकता।

जहाँ पहले महिलाएँ अपने घर तक ही सीमित थीं, आज वे अधिक सशक्त हैं। वे बाहर का और घर का, दोनों काम कर सकती हैं। महिलाओं की ये शक्ति निश्चित रूप से महान है।

आज ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ महिलाएँ न हों। ये सिर्फ समय की माँग है, और कुछ नहीं।

ब्रह्मांड ने इस धरती पर कुछ भी बिना कारण के नहीं बनाया है, सब कुछ अनमोल है, और सबका अपना स्वतंत्र अस्तित्व और पहचान है। किसी के भी मूल्य से इनकार नहीं किया जा सकता। इसलिए ये लड़ाई, जिसका कोई आधार ही नहीं है, इसे खत्म कर देना चाहिए। समाज को जीवित रखने के लिए दोनों का समान महत्व है।

हमारे त्योहारों से मिलता है हमको संस्कार

डॉ. शंकर घनशामदास अंदानी
अहिल्या नगर



भारत केवल भौगोलिक सीमाओं में बसा हुआ देश नहीं है, बल्कि यह विविध संस्कृतियों, परंपराओं, आस्थाओं और संस्कारों की पवित्र भूमि है । भारतीय संस्कृति की सबसे सुंदर विशेषता यह है कि यहाँ त्योहार केवल उत्सव मनाने के अवसर नहीं होते, बल्कि वे जीवन-मूल्यों और संस्कारों की शिक्षा देने वाली जीवंत पाठशालाएँ हैं । नवरात्रि, दशहरा और दीपावली जैसे पर्व हमारी नई पीढ़ी को सत्य, धर्म, साहस, प्रेम, त्याग, सेवा, स्वच्छता और सद्भाव का संदेश देते हैं। इसलिए कहा जाता है— "हमारे त्योहारों से मिलता है हमको संस्कार।"

नवरात्रि शक्ति और भक्ति का पर्व है। नौ दिनों तक माँ दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों की आराधना की जाती है। यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन में कितनी भी कठिन परिस्थितियाँ आएँ, हमें साहस और आत्मविश्वास के साथ उनका सामना करना चाहिए। माँ दुर्गा नारी शक्ति का प्रतीक हैं । इसलिए नवरात्रि हमें बेटियों और महिलाओं का सम्मान करने, उन्हें समान अवसर देने और उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करने की प्रेरणा देती है। आज के समाज में नारी सम्मान केवल विचार नहीं, बल्कि व्यवहार का हिस्सा बनना चाहिए। नवरात्रि का यही वास्तविक संदेश है।

दशहरा अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। भगवान श्रीराम का जीवन सत्य, मर्यादा, त्याग और कर्तव्य का आदर्श प्रस्तुत करता है। श्रीराम ने कठिन परिस्थितियों में भी धर्म का मार्ग नहीं छोड़ा। दूसरी ओर रावण विद्वान होने के बावजूद अहंकार और गलत आचरण के कारण विनाश को प्राप्त हुआ। इसलिए दशहरा हमें यह आत्मचिंतन करने का अवसर देता है कि हमारे भीतर कौन-से दुर्गुण हैं । अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और द्वेष जैसे "आंतरिक रावण" को समाप्त करना ही दशहरे की सच्ची शिक्षा है।

दीपावली प्रकाश और आनंद का महान पर्व है। घर-आँगन में जलने वाले दीपक अंधकार पर प्रकाश की विजय का संदेश देते हैं । दीपावली केवल घर की सफाई का पर्व नहीं, बल्कि मन की सफाई का भी अवसर है । हमें अपने मन से नकारात्मक विचार, कटुता और वैमनस्य दूर करके प्रेम, क्षमा और सद्भाव का दीप जलाना चाहिए। बड़ों का सम्मान करना, छोटों से स्नेह करना और जरूरतमंदों की सहायता करना दीपावली की सुंदर परंपराओं में शामिल होना चाहिए। जब एक दीपक दूसरे दीपक को जलाता है तो उसका प्रकाश कम नहीं होता, बल्कि बढ़ता है । यही हमें समाज में ज्ञान और मानवता बाँटने की प्रेरणा देता है।

हमारे त्योहार परिवार को जोड़ने और समाज में भाईचारा बढ़ाने का कार्य भी करते हैं । त्योहारों के अवसर पर परिवार के सदस्य एक-दूसरे से मिलते हैं, शुभकामनाएँ देते हैं और पुराने मतभेद भुलाकर प्रेम का वातावरण बनाते हैं। आज के डिजिटल युग में जब परिवारों के बीच संवाद कम होता जा रहा है, तब त्योहार हमें रिश्तों की गर्माहट और मानवीय संवेदनाओं का महत्व समझाते हैं।

आज की युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही है। यह आवश्यक भी है, लेकिन आधुनिकता के साथ अपनी संस्कृति और संस्कारों को बचाए रखना उतना ही महत्वपूर्ण है। त्योहारों के माध्यम से बच्चों को हमारी परंपराओं, महापुरुषों, धार्मिक कथाओं और नैतिक मूल्यों से परिचित कराया जा सकता है।

अतः हमारे त्योहार केवल पूजा, सजावट, मिठाई और मनोरंजन तक सीमित नहीं हैं। इनके पीछे गहरा जीवन-दर्शन छिपा है। नवरात्रि हमें शक्ति देती है, दशहरा सत्य और धर्म की विजय सिखाता है तथा दीपावली प्रकाश, प्रेम और सद्भाव का संदेश देती है। यदि हम इन त्योहारों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार लें, तो हमारा परिवार संस्कारी, समाज संवेदनशील और राष्ट्र मजबूत बनेगा।

सच ही कहा गया है—

"त्योहार हमारे जीवन का उजियारा हैं, संस्कार हमारी संस्कृति का सहारा हैं । इनसे प्रेम, सत्य और सद्भाव मिलता है, इसीलिए त्योहारों से हमको संस्कार मिलता है।"

अधूरा मिलन

एक जन्म से दूसरे जन्म तक की प्रेम-कथा

डॉ. सूर्य प्रताप राव
रेपल्ली, मुंबई



प्रेम का अर्थ मात्र पा लेना नहीं है, बल्कि एक-दूसरे की भावनाओं, आस्थाओं और एक दूसरे के अस्तित्व का पूर्ण सम्मान करना है!

कश्मीर की वादियों में बसे अनंतनाग की सुबह अपने आप में एक प्यारी सी कविता होती है! पहाड़ों पर उतरती सुनहरी धूप, पेड़ों से गुजरती ठंडी हवाएँ, दूर से आती पानी की कल-कल आवाज़ और उस पर चारों ओर फैली शांति— मानो प्रकृति स्वयं किसी कवि के लिए शब्द चुन चुन कर दे रही हो!

इन्हीं अनंतनाग की हरी भरी वादियों में एक शांत स्वभाव का युवक रहता था, नाम था रहीम! रहीम ने अभी-अभी अपनी डिग्री पूरी की थी और अब वह नौकरी की तलाश में था! स्वभाव से वह बहुत कम बोलता था, लेकिन उसके भीतर भावनाओं का एक विशाल संसार था तो प्यार भरे शब्दों का सागर ही उसके दिल में समाया हुआ लगता था! उसे कविता और शायरी से बेहद लगाव था! वह कहा करता था कि,

"कुछ बातें जुबान कह नहीं पाती, इसलिए उन अनकहे शब्दों को झील सी आँखें कह दिया करती हैं!"

उसकी कविताओं में प्रेम था, विरह था, जिंदगी की सच्चाई थी और इंसान के भीतर छिपे दर्द की आवाज़ थी! उसके मित्र अक्सर कहते कि रहीम कविता लिखता नहीं, बल्कि अपने दिल की धड़कनों को कागज़ पर शब्दों के रूप में उतार देता है!



"यूँ खूबसूरत भरे सुकून के चाह में,
सब कुछ गवां बैठा,
है नफ़रत करती जो मुझसे,
दिल अपना उसे दे बैठा!
उसकी खामोशी में भी मैनें,
दुआएँ पढ़ लीं आँखों से,
हर एक दर्द भूलाकर,
दिल यारों अपना उसे दे बैठा!
वो पास न होकर भी,
रूह में मेरे उतरती ही चली गई,
अनकही चाहत में,
न जानें दिल अपना उसे दे बैठा!"

काफी प्रयासों के बाद उसे एक कंपनी में नौकरी मिल गई! नौकरी उसके लिए केवल रोज़गार का साधन नहीं थी; वह इसे अपने जीवन की नई शुरुआत मानता था!

उसे क्या पता था कि इसी नौकरी के दौरान उसकी मुलाकात उस लड़की से होने वाली है, जो उसकी जिंदगी, उसके जिंदगी की सबसे खूबसूरत कविता ही बन जाएगी!

बस एक दिन अचानक ही कंपनी में उसकी मुलाकात पूनम से हुई!

पूनम की आँखें ऐसी थीं जैसे किसी शांत झील में नीला आसमान उतर आया हो! उसकी मुस्कान में ऐसी सहजता थी कि उसे देखकर किसी उदास चेहरे पर भी

मुस्कान आ जाए! वह खूबसूरत थी, लेकिन उसकी खूबसूरती केवल चेहरे तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसके व्यवहार में सादगी थी और बातों में अलग ही एक अपनापन!

पहली मुलाकात सामान्य थी, लेकिन कुछ मुलाकातें सामान्य होकर भी सामान्य नहीं रहतीं, बल्कि वो जिंदगी में एक नए परिवर्तन का आगाज़ भी कर सकती है! रहीम ने उस दिन पहली बार महसूस किया कि किसी अनजान चेहरे को देखकर भी मन में अपनापन क्यों और कैसे पैदा हो सकता है!

पूनम ने भी रहीम के शांत स्वभाव को महसूस किया था! वह सबकी बात ध्यान से सुनता था, किसी को छोटा नहीं समझता था और उसके व्यवहार में एक अजीब-सी विनम्रता थी! धीरे-धीरे दोनों के बीच बातचीत बढ़ने लगी!

पहले काम की बातें हुईं, फिर किताबों की, फिर कविता और शायरी की! एक दिन पूनम ने पूछा, "सुना है आप कविताएँ लिखते हैं?" रहीम मुस्कुराया, "हाँ... कभी-कभी!"

पूनम हँस पड़ी, "कभी-कभी? जब भी देखती हूं मैं, आपकी मेज पर हर दिन कागज़ और कलम खुला हुआ देखकर तो मुझे ऐसा नहीं लगता!"

रहीम भी मुस्कुरा दिया! उस दिन दोनों के बीच पहली बार एक ऐसी सहजता पैदा हुई, जिसे शब्दों की जरूरत नहीं थी! रहीम अक्सर पूनम को अपनी लिखी हुई नई कविताएँ सुनाता!

"हल्की सी मुस्कान देकर,
वो मेरा दिल चुरा ले गई,
जादू से मेरे दिल को उसने,
कैसे बाँध रखा पूछिए!
उसकी झील सी आँखों में,
है चाँदनी सी जो चमक,
क्या राज़ है उनकी खूबसूरती का,
ये उनसे पूछिए!"

एक दिन उसने कहा, कुछ लोग जिंदगी में अचानक मिलते हैं, लेकिन लगता है जैसे वो एक दूसरे को बरसों से जानते हों!" पूनम ने उसकी ओर देखकर पूछा, "और अगर वह अचानक मिलने वाला इंसान बहुत खास हो जाए तो?" रहीम कुछ पल चुप रहा, फिर धीरे से बोला, "तो शायद उसे खोने का डर भी साथ आ जाता है!" पूनम ने कोई उत्तर नहीं दिया, उसकी आँखों में एक हल्की सी मुस्कान थी!

दोनों के बीच प्रेम जन्म ले चुका था, मगर वह प्रेम एक दूसरे से इज़हार, इकरार से ज्यादा एहसास भरा हुआ था न कोई वादा था, न कोई दावा! न कोई भविष्य की कोई योजना! बस एक-दूसरे को एक दूसरे के आमने सामने होने की मौजूदगी में दिल को सुकून मिलता था!

एक दिन बातचीत के दौरान पूनम ने अपने धर्म और भारतीय संस्कृति के बारे में रहीम से बात की! उसने कहा, हमारे यहाँ जीवन को केवल जन्म और मृत्यु के बीच की यात्रा नहीं माना गया बल्कि हमारे ग्रंथ जीवन, कर्म, कर्तव्य और आत्मा के बारे में बहुत कुछ कहते हैं"

रहीम शांत होकर उसकी बातें सुनता रहा! पूनम ने अपने बातों को बीच में छोड़ अपने बैग से एक पुस्तक निकाली, वह भगवद्गीता थी! उसने वह पुस्तक रहीम की ओर आगे बढ़ाते हुए कहा, रहीम, इसे एक बार आप पूरा पढ़िए! आपको स्वयं समझ आएगा कि यह ग्रंथ इतने वर्षों के बाद भी लोगों के लिए इतना क्यों महत्वपूर्ण है!"

रहीम ने पुस्तक को अपने हाथों में लेकर पूनम की बातों को ध्यान से सुनते लगा! और धीरे से गम्भीर हो कर कहा, पूनम, तुमने दी है, तो जरूर पढ़ूँगा!" पूनम मुस्कुराई, और कहने लगी, सिर्फ पढ़ना मत... समझने की भी कोशिश करना!" रहीम ने उस गीता ग्रन्थ को धीरे धीरे से पढ़ना शुरू किया! उसमें कर्म, कर्तव्य, आत्मा और जीवन के अनेक प्रश्नों पर सटीक विचार पाकर वह देर तक सोचता रहा! उसके लिए उस पुस्तक का महत्व केवल धार्मिक नहीं था बल्कि वह पुस्तक अब पूनम की यादों से भी जुड़ चुकी थी!

अब दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे थे, मगर शायद किस्मत को यह मंजूर नहीं था कि उनका प्रेम इतनी आसानी से अपनी मंजिल तक पहुँच जाए! एक दिन अचानक रहीम की तबीयत खराब हुई, बस उम्र भी रही होगी केवल पैंतीस वर्ष! किसी ने सोचा भी नहीं था कि इतनी कम उम्र में वह दुनिया से ही चला जाएगा!

लेकिन यह भी सत्य है, के मृत्यु कभी भी किसी की उम्र नहीं पूछती! एक दिन वह चला गया, सबको छोड़कर, हमेशा के लिए! पूनम तक जब यह खबर पहुँची तो कुछ क्षणों के लिए वह जैसे पत्थर सी हो गई!

उसने खबर सुनकर केवल इतना कहा, "नहीं... यह ख़बर तो सच नहीं हो

सकता"! वह बार-बार यही सोचती रही कि अभी कल ही तो उससे लंबी मुलाकात हुई और बात हुई थी! अभी तो उसकी कविताएँ बाकी थीं! अभी तो बहुत-सी बातें बाकी थीं! अभी तो दोनों के बीच प्रेम का इकरार भी नहीं हुआ था! अभी तो जिंदगी शुरू ही हुई थी, वह कैसे खत्म हो सकती थी?

पूनम दिल ही दिल कहने लगी...

"कुछ कसमें वादे अधूरे रह गए,
कुछ सपने बिखर गए,
हम दोनों एक-दूजे के होकर,
न जाने कैसे बिछड़ गए!"

लेकिन सच सामने था, रहीम अब इस दुनियां से बहुत दूर जा चुका था! पूनम उसके कमरे तक पहुँची! मेज़ पर रहीम की डायरी रखी थी! उसने काँपते हुए अपने हाथों से डायरी उठाई! बस धीरे से सामने का एक पन्ना खोला!

उस पर एक छोटा सा लाइन लिखा हुआ था, "कुछ लोग जिंदगी में ऐसे आते हैं, जिन्हें भूलना चाहो तो चाहकर भी भुलाया नहीं जाता!" पूनम की आँखों से आँसू गिर पड़े!

एक और कविता के अंश रहे..

"ये गुलाबी लबों की नरमी,
छू जाती मेरे रूह को,
सिसकती हुई धड़कनें मेरी,
मुस्कुरा उठी होती!
कुछ पल के लिए सही,
अगर तुम जो मेरी होती,
मेरी छोटी सी ये दुनियां,
सचमुच में जन्नत होती!
मेरी छोटी सी ये दुनियां,
सचमुच में जन्नत होती....."

उसने डायरी को अपने सीने से लगा लिया! "रहीम... तुमने यह क्यों लिखा था?" उसकी आवाज़ टूट सी गई! "क्या तुम्हें पता था कि तुम मुझे इतनी जल्दी छोड़ कर मुझसे दूर बहुत दूर चल दोगे?"

कोई उत्तर नहीं था! कमरे की खामोशी ही जैसे उसका उत्तर बन गई थी! तभी उसकी नजर उस भगवद्गीता पर पड़ी, जो उसने कभी अपने हाथों से रहीम को दी थी उसने उसे उठाया और आँखों से लगा लिया! फिर फूट-फूटकर रो पड़ी! और चीख़ चीख कर कहने लगी, "मैंने तुम्हें यह किताब जीवन समझने के लिए दी थी रहीम... मुझे क्या पता था कि एक दिन मुझे ही तुम्हारे बिना ये मेरा जीवन समझना पड़ेगा!"

उस दिन पूनम ने पहली बार महसूस किया कि किसी के चले जाने का दुःख केवल उसकी अनुपस्थिति नहीं होता!

उसके साथ जुड़ी हर छोटी चीज़ भी दर्द बन जाती है, उसकी आवाज़, उसकी हँसी, उसकी लिखावट, उसकी कविताएँ, उसकी पसंद,यहाँ तक कि उसकी सादगी और चुप्पी भी!

रात को पूनम खिड़की के पास बैठी रही! बाहर नीले से आसमान पर चाँद था, उसे याद आया कि रहीम अक्सर कहता था, "चाँद तो सचमुच ही खूबसूरत है, लेकिन तुम्हारी झील सी आँखों में उसका प्रतिबिंब उससे भी ज्यादा खूबसूरत लगता है!"

पूनम ने चाँद की ओर देखकर कहा, "आज भी चाँद वही है रहीम... बस उसे देखने वाला और उसकी खूबसूरती की तारीफ़ करने तुम नहीं हो!" आँसू लगातार बहते रहे, किसी ने इसी बीच उससे कहा, "समय सब ठीक कर देगा, पूनम हल्के से मुस्कुराई, उसकी उस मुस्कान भी दर्द से भरी हुई थी!

उसने मन ही मन कहा, "समय शायद घड़ी की सुइयों को आगे बढ़ा देता है, लेकिन दिल को पीछे छूटे इंसान से अलग नहीं कर पाता!"

रहीम की कविताएँ अब उसकी जिंदगी का सहारा बन चुकी थीं! वह रातों को उसकी डायरी पढ़ती! कभी मुस्कुराती, कभी रोती, कभी किसी पन्ने को चूम लेती, और कभी धीरे से कहती, "तुम्हारे शब्द तो मेरे पास हैं रहीम, लेकिन तुम्हारी आवाज़ कहाँ से लाऊँ?"

वह अक्सर उसी रास्ते पर जाती जहाँ दोनों साथ चले थे, उसी जगह बैठती जहाँ उसने पहली बार उसकी कविता सुनी थी, उसकी आँखें हर भीड़ में बस रहीम को खोजतीं!

लेकिन हर बार उसे खालीपन मिलता, धीरे-धीरे पूनम के भीतर का जीवन शांत होता गया! वह लोगों के बीच रहती थी, लेकिन मन से कहीं बहुत दूर चली गई थी! एक दिन उसने आसमान की ओर देखते हुए कहा, "अगर सचमुच जन्मों का कोई रिश्ता होता है, तो अगले जन्म में बस मुझे तुम्हें ढूँढ़ना मत पड़े! तुम खुद ब ख़ुद मुझे पहचान लेना! इस बार मुझे तुम्हें खोना नहीं है!"

शायद यह केवल एक दुखी प्रेमिका की प्रार्थना थी! या शायद नियति ने उसे सुन लिया था! कुछ वर्षों बाद पूनम भी इस संसार से विदा हो गई! उसके जाने के साथ एक प्रेम-कहानी का वह अध्याय बंद हो

गया! जहां दो दिल मिले थे, एक-दूसरे को चाहा भी था! लेकिन उनका मिलन अधूरा रह गया था बस! अधूरा मिलन.....

समय बीतता गया!

एक नए स्थान व दूसरे परिवार में एक बालक ने जन्म लिया! उसका नाम रखा गया—राजेश!

राजेश बचपन से ही कुछ अलग था! उसे कविता पसंद थी, उसे शायरी पसंद थी! उसे कश्मीर के वादियों की तस्वीरें देखकर अजीब-सी आत्मीयता महसूस होती! झीलों को देखना उसके किनारे बैठना उसे अच्छा लगता था! कभी-कभी वह ऐसे शब्द कह देता या लिख देता था जिन्हें देखकर उसके परिवार वाले और कविताओं को पढ़ने वाले भी हैरान हो जाते! उसे स्वयं भी नहीं पता था कि उसके भीतर ये भावनाएँ कहाँ से आती हैं और क्यों अनायास कश्मीर से संबंधित बातें, वादियों के चित्र, झील को देखने से एक अपनापन सा महसूस होता रहा।

उधर एक लड़की दूसरे परिवार में बड़ी हो रही थी, नाम था उसका रिद्धि! उसकी आँखों में वही झील जैसी गहराई थी, उसकी मुस्कान में वही अपनापन भी था! उसे भी कविता, कहानियां पसंद थी! उसके लेखनी में एक धार भी थी, शब्दों में संवेदनशील और बातों में गहराई के साथ ही साथ बेबाक शैली भी! उसे भी कभी-कभी ऐसा लगता जैसे उसकी जिंदगी में कोई अधूरी कहानी है, जिसका आरंभ उसे याद नहीं! और आरंभ करने के लिए वह रह रह कर आतुर होते रहती है।

राजेश और रिद्धि दोनों अपने अपने परिवार में अपनी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं और दोनों खुश भी हैं!

काफी दिनों बाद, फिर एक दिन अचानक ही राजेश और रिद्धि की मुलाकात हुई! पहली नजर में ही दोनों कुछ पल के लिए ठहर गए! राजेश ने रिद्धि को जो झलक अनायास ही देखा था, उसे लगा जैसे वह इस लड़की को पहले से जानता है! रिद्धि जो पहली बार राजेश से मिली थी, उसे भी वही एहसास हुआ पर रिद्धि उस एहसास को आसानी से समझ नहीं पा रही थी!

दोनों की मुलाकात हुई, कुछ इधर उधर की पारिवारिक बातें भी हुई, पर उन बातों के बीच राजेश और रिद्धि एक दूसरे को निगाहों ही निगाहों से देखते हुए ये समझ नहीं पा रहे थे, कि ऐसा क्यों हो रहा है!

समय के साथ उनकी पारिवारिक दोस्ती बढ़ी, मिलना, बार बार पारिवारिक मिलन के कारण उनके बीच नजदीकियां भी बढ़ने लगी! एक दूसरे से मेल मिलाप होते हुए वो दोनों एक दूसरे के क़रीब आने लगे, एक दूसरे के बारे में जानने के लिए उत्सुक भी रहते थे!

एक बार बातों ही बातों में राजेश को कुछ एहसास हुआ जो उसने अपने शब्दों में रिद्धि के सामने कह दिया...

न जाने क्यों, तुम्हारे करीब आते ही मेरे इस दिल को सुकून सा लगता है, लगता है जैसे अधूरे जन्म का, कोई खोया हुआ है जुनून मुझे फ़िर से मिल रहा हो! रिद्धि ने राजेश के इन बातों को ध्यान से सुना ज़रूर पर उन बातों को गंभीरता से नहीं लिया और हँसते हुए चली गई!

राजेश जो अपनी कविताएं लिख रहा था, अब उसके के कविताओं में झील सी आँखों और मुस्कान भरी, खूबसूरती से शब्दों का उपयोग होने लगा और वह अपने कविताओं के संग्रह को भी एक नई जान डालते हुए एक पुस्तक को आकर दे दिया था! राजेश की उस कविता संग्रह को पढ़कर रिद्धि को भी काफ़ी अच्छा लगा!

अब राजेश अपने लिखी नित नई कविताओं को रिद्धि को सुनाता और रिद्धि भी राजेश के लिखी कविताओं पर आनंदित हो रही थी!

राजेश ने एक दिन उसे अपनी लिखी कविता सुनाई:

कुछ रिश्ते कभी नाम नहीं माँगते,
बस दिल में वो जगह बना लेते हैं,
कुछ लोग एक जनम में मिलकर,
कई जन्मों का साथ निभा लेते हैं!

रिद्धि की आँखें अचानक नम हो गईं, उसने पूछा, "तुम ऐसी कविताएँ कैसे लिख लेते हो?" अनायास ही राजेश ने कहा, "पता नहीं... लगता है जैसे कोई पुरानी कहानी या कोई अदृश्य आत्मा ही मुझसे लिखवा रही हो!"

एक दिन दोनों झील के किनारे बैठे थे, शाम का सूरज पानी में उतर रहा था, रिद्धि ने अचानक ही पूछा, "राजेश, क्या तुम्हें कभी लगता है कि हम पहले भी कभी कहीं मिले हैं?" राजेश ने उसकी ओर देखा और कहा, "हाँ"... "कहाँ?" याद नहीं,

रिद्धि कह उठी "फिर कैसे?" मिले हम?

तभी राजेश ने अपने डायरी से एक कविता के लिखी एक अंश पढ़ लिया....

"लगे शायद पिछले जन्म में,
तुमसे मेरी मोहब्बत थी हुई,

मगर किस्मत की किसी साज़िश,
हमारी जुदाई जो हुई!"

राजेश ने झील की ओर देखते हुए कहा, "कुछ मुलाकातें याद नहीं रहतीं रिद्धि...पर हां, दिल ही दिल बस वो महसूस होती हैं"!

रिद्धि की आँखें भर आई! अब उसे कुछ अलग ही एहसास हो रहा था, उसे अचानक कुछ धुंधली-सी तस्वीरें उसके आँखों के सामने दिखाई देने लगीं, एक युवक...उसके हाथों में एक कविताओं की डायरी...एक पुस्तक...और साथ में एक लड़की, जो उसके हाथों में किसी किताब को दे रही हो!

रिद्धि उस धुंधली-सी तस्वीरें देखते हुए बस अपनी आँखें बंद कर लीं, राजेश ने आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया! उस पल जैसे दो जन्मों के बीच दो लोगों के बीच का पर्दा थोड़ा-सा हट गया!

सब कुछ साफ नहीं था, लेकिन इतना स्पष्ट था कि दोनों के मिलन से दोनों के बीच का यह रिश्ता दोनों के लिए अब नया भी नहीं था!

रिद्धि के दिल में भी अब ये एहसास होने लगा कि...

शायद ऊपर वाले ने
फिर से हमें मिलाने की है ठानी,
कहानी जो अधूरी रह गई,
पूरी करने की ये निशानी!

रिद्धि ने धीमे से कहा, "शायद हम पहले भी एक-दूसरे से मिले हैं और हो सकता है हम एक दूसरे को पहले से जानते हो और हो सकता है एक दूसरे से हम प्यार करते थे"... राजेश ने पूछा,"और?" और शायद फिर हम दोनों एक दूसरे से नहीं मिले या मिल नहीं पाए" बस बिछड़ गए हैं एक दूसरे से राजेश!

एक दिन रिद्धि ने राजेश से पूछा "अगर तुम सच में वही हो, तो क्या तुम्हें भगवतगीता याद है?" राजेश कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, सच कहूँ तो "पूरी नहीं... लेकिन एक बात बहुत गहराई से महसूस होती है!"

"क्या?" "जैसे किसी ने मुझे कभी एक किताब दी थी और कहा था, इसे पढ़ना, शायद जीवन को समझ सको!" रिद्धि की आँखों से आँसू निकल आए! अब उसे भी एहसास हो चुका था, कि यही राजेश है जिसे उसने पिछले जन्म में पूनम के रूप में एक पुस्तक पढ़ने को दी थी और उसके कुछ समय बाद दोनों एक दूसरे से अलग हो गए थे!

राजेश की आँखें नम हो गई थीं, रिद्धि ने आगे बढ़ राजेश का हाथ थाम लिया और कहने लगी, राजेश ये भी कैसा संयोग है उस समय हमारे बीच कुछ नहीं था, न परिवार, न कोई धर्म की दीवार, न किसी के नाम का प्रश्न, न किसी के जन्म का हिसाब!

विडम्बना भी ये है कैसी कि अब जो मिले हैं एक दूसरे से तो आज ये सब हमारे बीच आ खड़े हुए हैं! उस समय जो हमारा मिलन होते होते रह गया या शुरू तो हुआ था पर मिलन अधूरी ही रह गया था, वह आज भी किस्मत से किस मोड पर लाकर हमें मिला रही है कि हम चाहकर भी एक दूसरे का नहीं हो सकते!

अब वो दोनों बस दो इंसान थे, जो एक-दूसरे को, एक दूसरे के दुख दर्द और खुशी को समझने लगे थे! रहीम और पूनम का प्रेम जहाँ समाप्त हुआ था, वहीं से राजेश और रिद्धि की अपनी यह एक नई कहानी उनके अपने पूर्व जन्म के जीवन की समझ आई!

राजेश और रिद्धि का प्रेम इस बात का प्रमाण नहीं था कि हर प्रेम-कहानी पुनर्जन्म लेती है! बल्कि इस बात का उदाहरण ज़रूर बन सकती है जैसे कि यह उनकी अपनी भावनाओं की एक ऐसी यात्रा थी, जिसमें उन्हें लगा कि उनका रिश्ता किसी पुराने अधूरे किसी अध्याय से जुड़ा है!

उन्होंने जाना कि प्रेम केवल किसी को पाने का नाम नहीं!

प्रेम किसी की भावनाओं का सम्मान करने का नाम है, किसी की आस्था को समझने का नाम है! किसी की अनुपस्थिति में भी उसकी अच्छी यादों को जीवित रखने का नाम है! और कभी-कभी प्रेम का सबसे सुंदर रूप यह होता है कि दो इंसान एक-दूसरे को बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लें!

राजेश और रिद्धि झील के किनारे बैठे थे! रिद्धि ने पूछा, "क्या तुम्हें लगता है हमारा मिलन इस बार पूरा हो गया?"

राजेश मुस्कुराया, और बोला,मिलन शायद कभी पूरा या अधूरा नहीं होता"

"फिर?"

जिस पल दो दिल एक-दूसरे को सच्चाई से स्वीकार कर लें, वही पल पूरा मिलन बन जाता है! रिद्धि ने अपना सिर हल्के से राजेश के कंधे पर रख खुले हुए नीले आसमान की ओर बस एकटक सी

देखती रही, जहां से उसे कभी कुछ धुंधली-सी तस्वीरें उसके आँखों के सामने दिखाई देने लगीं थी पूर्व जन्म की....

झील शांत थी, नीले आसमान में चाँद था, हवा में हल्की सी ठंडक थी, और दो जन्मों से भटकती रही एक प्रेम-कहानी पहली बार एक नए अंदाज़ में दोनों ही सुकून से मुस्कुरा रहे थे! रहीम और पूनम के नाम बदल गए थे, समय बदल गया था, जन्म भी बदल गया था, स्थान भी बदल गया पर प्रेम की वह अनुभूति फिर लौट आई थी, राजेश और रिद्धि के नाम से!

एक जन्म में वे दोनों मिले, मगर एक दूसरे से मिल न सके! दूसरे जन्म में वे फिर मिले, एक दूसरे को पहचान भी लिये पर विधि का लिखा फिर वही हुआ, मिल के भी वो दोनों फिर एक दूसरे से नहीं मिल पाए! शायद इसलिए कि उन्हें समझ आ सके कि सच्चे प्रेम की सबसे बड़ी पहचान सिर्फ दो शरीर का मिलन नहीं, बल्कि सही मिलन उस सम्मान और अपनापन में है जो दो दिल एक-दूसरे को दिल ही दिल देते हैं और एक ख़ुशी महसूस करते हैं!

और इस तरह, एक जन्म का अधूरा मिलन, दूसरे जन्म में एक नई कहानी बन गई! और दोनों एक दूसरे का हाथ थामे दिल ही दिल कहने लगे....

पिछले जन्म का है अधूरा इश्क़,
इस जन्म में पूरा हुआ,
तुम जो मिली मुझे,
लगे मेरा हर ख़्वाब अब पूरा हुआ!

इसलिए कहा जाता है, शायद कुछ प्रेम कहानियाँ समाप्त नहीं होतीं, बल्कि वे बस समय की किताब में एक नया पन्ना छोड़ देती हैं, ताकि कभी किसी दूसरे जन्म में कोई उसे फिर से खोले,

और लिख दे, बस यही लिख दे, "इस बार अपनी कहानी अधूरी नहीं रहेगी..."

बस अधूरी नहीं रहेगी.... अब वो अपना "अधूरा मिलन"!

विराम.....





योग निष्ठ ; अध्यात्म विज्ञान वैज्ञानिक

श्राद्ध एक चेतना की यात्रा- परमेश्वर, प्रकृति एवं पूर्वज- त्रि शक्ति चेतना



अश्विनी कुमार

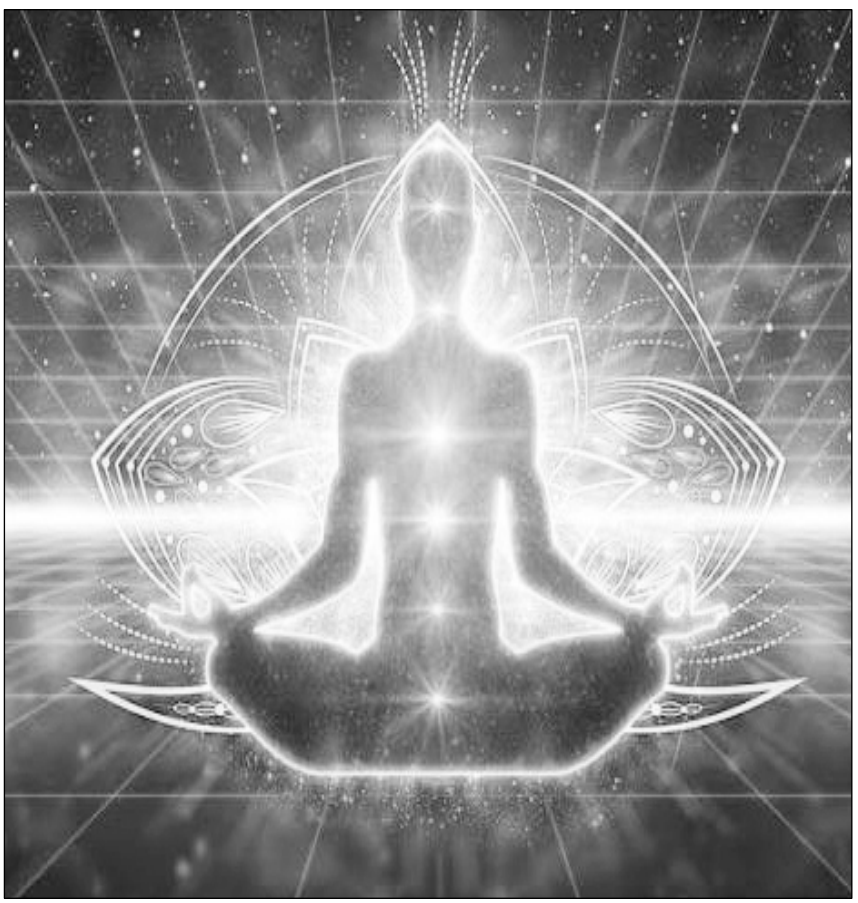
सृष्टि की रचना और मानव जीवन की उत्पत्ति ईश्वर और प्रकृति की अद्भुत विलक्षण वैज्ञानिक रचना है। यह रचना प्रकृति रूप से सूक्ष्म और मानव जीवों की स्थूल रूप से की है। पंचतत्व तत्व सभी इन्द्रिय आत्मा और प्राण ऊर्जा परमात्मा और प्रकृति से निर्मित आंतरिक यांत्रिक चेतना से युक्त ढाँचा मनुष्य कहलाया और फिर मानव जीवन पीढ़ी परंपरा चली। मनुष्य के कर्म से गुण स्वभाव उसके विचार धारा से जीवन प्रवाह होने लगा और वंश के रूप में ये यात्रा चलते आ रही है जो पहले आए उसे पूर्वज कहा गया और वंश उस चेतना के विस्तार है।

मानव चेतना

चेतना ईश्वर एवं प्रकृति द्वार दिया गया संस्कारों से युक्त एक तरंग है ईश्वर मनुष्य की अदृश्य चेतना में एक संस्कार के रूप में स्थित है यह चेतना विभिन्न रूप में विभिन्न परिस्थितियों में अच्छी बुरे कर्म और विचार धारा के रूप में चलते रहती है। परिणाम कर्म की चेतना का अच्छा बुरा बोध और अबोध सभी प्रकार की स्थितियों वाला होता है जो की एक जीवन चक्र है।

श्राद्ध एक योग साधना

श्राद्ध पूर्वजों के प्रति एक आभार और कृतज्ञता युक्त श्रद्धा है और दूसरी तरफ़ चली आ रही चेतना को अपनी चेतना के साथ सम्पूर्ण चेतना को चैतन्य रूप में परिष्कृत करना एक साधना है। लौकिक और दृश्य मनुष्य की रचना और अस्तित्व का जगत उसी अदृश्य अलौकिक परम चेतना से रवित है। सृष्टि की अद्भुत रचना को ईश्वर और प्रकृति के अनुकूल अपनी देव संस्कृति चेतना के साथ इसे बनाए रखना और सहभागिता निभाना मनुष्य का धर्म कर्तव्य है। स्वामी विवेकानंद महात्मा बुद्ध जैसे और भी महान



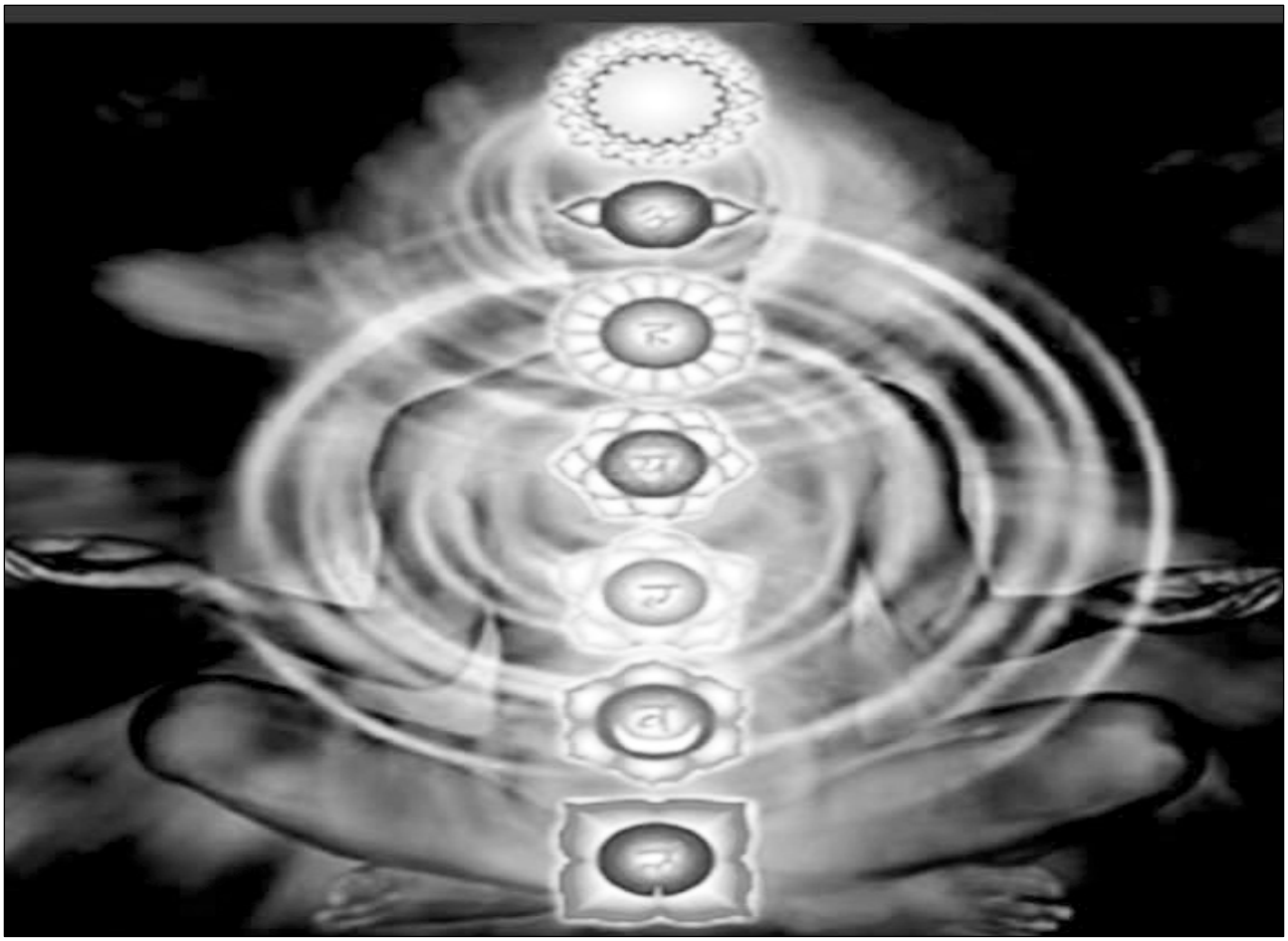
विभूतिया महान योगी संत इस संदर्भ के प्रत्यक्ष प्रमाण है. यही जब चेतना अपनी वास्तविक अस्तित्व में नहीं रहती तो इसकेविपरीत अज्ञानता का जन्म होता जिससे विपरीत कर्म और जीवन दिशा हीन होता है और जीवन उलझ कर रह जाता है। फिर कर्मो के हिसाब किताब प्रकृति और विधाता के विधान से होने लगता है। यही चेतना ज्ञान हमारे सनातन धर्म वेद शास्त्र आत्मतत्व बोध और जागृति करने की प्रेणा देते है।

कर्म कांड से भी महत्वपूर्ण है सूक्ष्म चेतना का पोषण रूपी भोजन देना जब चेतना ईश्वर के गुण संस्कार से तप कर निर्मल जागृत और दिव्य हो जाती है, श्राद्ध मानव चेतन कोई भय बंधन और भ्रम नहीं है और ना ही केवल यह एक कर्म कांड है बल्कि यह नव चेतना धारा प्रवाह विकास है अनुभूति विचारों नए आयाम का प्रवाह है भौतिकता के

भावों से भी परे मान सम्मान अपराध क्षमा से भी परे आत्म बोध जागृति और जीवन की पराकाष्ठा है जो चेतना को अपनी वास्तविक अस्तित्व में स्थापित करती है।

श्राद्ध के पंद्रह दिन तो याद के संकेत हैं लेकिन उसके बाद शक्ति कीउपासना का पर्व यह परम चेतना के लिए प्रेरणा देने का पर्व है । रूप गुण संस्कार भाव स्वभाव प्रभाव मिलकर एक व्यक्तित्व निर्माण

सभी उस विशाल सागर में विलीन हो जाति है और सागर ही कहलाती है ठीक वैसे ही अपनी समस्त चेतना की यात्रा को उस परम चेतना में विलीन कर देना जहाँ सारे भेदभाव दोष अज्ञानता स्वतः ही



चेतना एक चैतन्य पुकार

यह वह परम आनंदमय लक्ष्य सार्थक वास्तविक अस्तित्व का प्रेम क़र्ज़ है जिस परम चेतना और पूर्वजों ने जिस रूप में दिया उसे उसी रूप में देना है। जब जीवन की भौतिक आवश्यकता लक्ष्य बनकर ही रह जाए तो चेतना की अधूरी पुकार स्वाभाविक है और कह रही है हम से जो अधूरा रह गया उसे अब समझ ले।

करता हैं जो की एक भावनात्मक चेतना भी है सदियों से चली आ रही वंश रूप में चेतना की यात्रा अनंत है । अपनी इस चेतना की यात्रा में योग के ताप से परम चेतना प्रकृति और ईश्वर के गुण और संस्कारों को दिव्य चेतना के रूप में धर्म रूप में धारण करना और उनके स्वरूप का व्यवहार रूप में आत्मसात करना चैतन्य की साधना है ठीक उसी तरह जैसे नदियाँ अपनी उद्गम स्थान से यात्रा करती हुई

समाप्त हो जाते हैं। अविरल प्रवाह चेतना निरंतर प्रवाहमान है

(लेखक के सभी विचार स्वयं के योग साधना एवं अध्यात्म से प्रेरित है ।)

पौराणिक कथाएं

विजयादशमी को दशहरा भी कहते हैं। बुराई पर अच्छाई की जीत की खुशी में यह पर्व आश्विन माह के शुक्ल की दशमी तिथि के दिन मनाया जाता है।

इस दिन से जुड़ी यूं तो कई पौराणिक कथाएं हैं। पहली दुर्गा महिषासुर से जुड़ी कथा, दूसरी राम रावण युद्ध से जुड़ी कथा, तीसरी कुबेर और राजा रघु से जुड़ी कथा और चौथी पांडव विजय उत्सव। इसमें से पहली और दूसरी को ही विशेषरूप से विजयादशमी और दशहरा से जोड़कर देखा जाता है और इसी के कारण ही यह पर्व मनाया जाता है।

१. विजयादशमी- महिषासुर मर्दिनी कथा

रम्भासुर का पुत्र था महिषासुर, जो अत्यंत शक्तिशाली था। उसने कठिन तप किया था। ब्रह्माजी ने प्रकट होकर कहा- 'वत्स! एक मृत्यु को छोड़कर, सबकुछ मांगों। महिषासुर ने बहुत सोचा और फिर कहा- 'ठीक है प्रभो। देवता, असुर और मानव किसी से मेरी मृत्यु न हो। किसी स्त्री के हाथ से मेरी मृत्यु निश्चित करने की कृपा करें।' ब्रह्माजी 'एवमस्तु' कहकर अपने लोक चले गए। वर प्राप्त करने के बाद उसने तीनों लोकों पर अपना अधिकार जमाकर त्रिलोकाधिपति बन गया। तब सभी देवताओं ने भगवती महाशक्ति की आराधना की। सभी देवताओं के शरीर से एक दिव्य तेज निकलकर एक परम सुन्दरी स्त्री के रूप में प्रकट हुआ। हिमवान ने भगवती की सवारी के लिए सिंह दिया तथा सभी देवताओं ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र महामाया की सेवा में प्रस्तुत किए। भगवती ने देवताओं पर प्रसन्न होकर उन्हें शीघ्र ही महिषासुर के भय से मुक्त करने का आश्वासन दिया। माता ने महिषासुर ने ९ दिन तक युद्ध करने के बाद १०वें दिन उसका वध कर दिया इसलिए विजयादशमी का उत्सव मनाया जाता है। महिषासुर एक असुर अर्थात दैत्य था वह राक्षस नहीं था। कहते हैं कि इसी दिन देवी सती अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अग्नि में समा गई थीं। बाद में उन्होंने हिमावान के यहां पार्वती के रूप में जन्म लिया था।



२. दशहरा- राम रावण कथा

अयोध्या के राजा दशहरथ के पुत्र प्रभु श्रीराम को १४ वर्ष का वनवास हुआ। वन में उनके साथ उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी गए। वन में १२ वर्ष गुजर जाने के बाद एक समय वे गोदावरी नदी के पास पंचवटी में कुटिया बनाकर रहने लगे। वहां पर लंका के राजा रावण ने छल से माता सीता का अपहरण कर लिया। इसके बाद प्रभु श्रीराम ने हनुमानजी, सुग्रीव, जामवंत और वानर सेना के माध्यम से समुद्र पर सेतु बनाया और लंका पर चढ़ाई कर दी। कहते हैं कि प्रभु श्रीराम और रावण का युद्ध कई दिनों तक चला अंत में श्रीराम ने दशमी के दिन रावण का वध कर दिया था। रावण एक राक्षस था वह असुर नहीं था। रावण वध के कारण ही दशहरा मनाया जाता है। इस दिन रावण के पुतले का दहन होता है।



कोंपल

किरण भंडारी

हाँ, तुम्हें जल्दी ही किसी दूसरे का हाथ थाम लेना चाहिये। उमर की दरकार भी तो है। तलाशती रहना। बल्कि, जब सब कुछ ऐसा ही था, परीबड़े बड़े डैनों में णिती इसी बिंदु पर थमती थी, तो कुछ अनुमान सतही हो ही सकता था। सुबह जब भी आये, समझो स्वागत की अवश्यभाविता की दरकार लिये रहती है।



उमी के कानों में जानती हूँ यह उड़ला ख़ौलता शीशा था, जो दूर दूर तक सब कुछ चूर चूर कर सकता था। रूह तक काँप जाती थी। पर ठंडे दिमाग से कहीं दूर नर्म भुरभुरी सोंधी मिट्टी में चटका कोई बीज नन्ही कोंपल के साथ, कोंपल के सिर उठाने से पहले और कहीं और गहराई में जा अपनी पैठ बना उसे अपने अस्तित्व की पहचान की पहचान का एहसास दिला भी जाता था। एक बच्ची की माँ थी। कोंपल की सी पल पल पीत हरितिमा लिए... हर वक्त खिल खिल जाती। उस नन्ही धड़कन से, क्या धरती से सिर उठा सारी दुनिया से लड़ अपनी ताकत बढ़ा वजूद बनाती यह कोंपल पत्ती पौधा वृक्ष और एक परिपक्व वट बन सामंजस्य स्थापित कर पाएगी। कहीं वह अपना वजूद बना उसे ठुकरा न दे...। रूह काँप काँप जाती है। आत्मा दुत्कार देती है ऐसे प्रस्ताव को। जमीं पर समर्पण जब सौ प्रतिशत भी हो और अधिकार न मिले, संवेदनाएं ठुकराई जाएँ, अंधी सोचों की काली चादर चमगादड़ और गीधों के डैनों में सब कुछ बार बार दबोच चूहे-बिल्ली के खिलवाड़ को अख्तियार करते चलें तो नवजीवन के लिये उठा कोई भी कदम बेमानी हो सकता है। पृष्ठभूमि को भावी का आधार मानने के सच को झुठलाया भी तो नहीं जा सकता। उसकी आँखें माँ के सुझाये रास्ते के अवलोकन के लिये उदाहरणों को तलाशती रहती। कान जानी अनजानी फुसफुसाहटों पर टिके रहते। शायद कहीं कोई हरिश्चंद्र मिल जाये। पर कब... कैसे...। उम्र की रेलगाड़ी हर साल अपने डिब्बो के साथ सटासट आगे बढ़ती जा रही है। तलाश की इस अंतिम जद्दोजहद में उसे लगता है शायद वह कभी न इंजन को पकड़ सकेगी और न डिब्बो को। ड्राइवर निश्चित ही सिग्नल देकर आएगा। गार्ड भी नियमानुसार ही एक के बाद एक सारे डिब्बो के निकल जाने के बाद हरी झंडी हिला हिलाकर अलविदा कहता जायेगा। वह ठगी सी खड़ी है। क्या खड़ी की खड़ी ही रह जाएगी। समय की दहलीज पर पुरुष से हारी नारी क्या खुद को नहीं जीत पाएगी। स्वयंसिद्धा अधूरी नहीं हो सकती। उसे पूरा बनना होगा। अपने लिये भी और अपनी नन्ही कोंपल के लिये भी।



पुस्तक समीक्षा

जिसे मैं कह नहीं पाया : ज़ख्मों की गहराई

कृतिकार - धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'

गणेश प्रसाद 'गम्भीर'
भारद्वाजी टोला,वाराणसी

चर्चित ग़ज़लकार धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल' का सद्यःप्रकाशित ग़ज़ल संग्रह है -'जिसे मैं कह नहीं पाया प्रेम विषयक ग़ज़लों का संग्रह हैं। साहिल चाहे जो कहें उनका यह शे'र सब कुछ कह देता है-

"फूल में, शबनम में, बादल में, नदी में, चाँद में
क्या कहें किस-किस में तेरा अक्स हम देखा किए"

अब कहने के लिए बचा ही क्या? सब कुछ तो कह दिया है साहिल ने। ये अलग बात है कि-

"मुद्दतों के बाद वो मुझसे मिला
लफ्ज़ मेरे जाने क्यों पथरा गए"

यह बेबसी उनके अंतर्मन को मथती रह गई।

'साहिल' अपनी इन ग़ज़लों की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि "जख्मे दिल था कि रिसता रहा रात भर
था सुखन कि उमड़ता रहा रात भर"

साहिल अपने शब्दों से सजीव चित्रण में माहिर हैं,वे इसी कड़ी में इसी ग़ज़ल में बहुत मासूमियत से कहते हैं -

"मेरे कमरे में दिन भर उमस सी रही
और बादल बरसता रहा रात भर"

और इस शेर को पढ़कर सम्वेदनशील हृदय से यही आवाज उठती है कि "इन अशआर में कहीं मैं तो नहीं हूं।" और फिर यह स्वीकार करना पड़ता है कि "हां इसमें मेरा दिल है, मेरी तनहाई है, मेरा फ़साना है", अगर किसी का दिल किसी के लिए कभी धड़का हो तो।

ग़ज़लकार खुद से सवाल करता है--

"क्यों खुला रखता हूं मैं दरवाजा
जब किसी का भी इंतजार नहीं"

लेकिन वह बेहिचक स्वीकार करता है कि-

"ज़ख़्म हँसते हैं, मुस्कुराते हैं
सामने जब वो मेरे आते हैं"

और गूढ़ रहस्य पर से पर्दा उठाते हुए साहिल कहते हैं कि-

"सच्ची चाहत तो वो समुंदर है
जिसका कोई भी आर-पार नहीं"

'साहिल' सब कुछ साफ़ साफ़ बहुत सलीके से कह देते हैं-

"कितने सावन-बसंत आए हैं भी
मेरा दिल फूल सा खिला ही नहीं।
जिससे हर राज़ दिल का कह दूं मैं
दोस्त ऐसा कोई मिला ही नहीं।"

उनके पास अपना जम चुका दर्द है फिर भी वह जमी हुई बर्फ के पिघलने के प्रति आश्वस्त हैं-

"जम गया हूं मैं किसी बर्फ के दरिया की तरह
धूप बनकर तू मुझे मेरी रवानी दे जा"

वे कहते हैं -

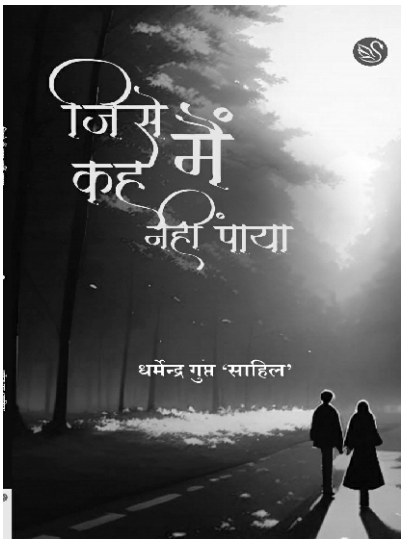
"दर्द है, सोज़ है, प्यास है ज़िंदगी
जो न पूरी हो वो आस है ज़िंदगी"

साहिल का हर शेर सीधे सीधे दिल में उतर जाता है और देर तक उसकी प्रतिध्वनि मानस में गूंजती रहती है। वे चौंकाते हैं और स्तब्ध भी कर देते हैं।

जब ऐसे शेर उनकी कलम उकेरती है तो-

"किस तरह बुझ गया मेरे सच का दीया
दूर तक जब हवा का पता ही नहीं"

'जिसे मैं कह नहीं पाया' की ग़ज़लें मन मोह लेती हैं। इनमें स्पंदन है, तन्हाई है, दर्द है, ज़िंदगी के अनेक रंग हैं।



इन ग़ज़लों में कहीं ऐसा नुक़्स नहीं दिखा जिसकी चर्चा करता।

अपनी बात कहने के लिए मैंने संग्रह की कुछ ग़ज़लों के चंद अशआर लिए हैं, जैसे समुंदर से कुछ मोती बीने गए हों। अभी तो अगाध सम्पदा है इस संग्रह रूपी रत्नाकर में।

यह उनकी साधना का फल है। 'साहिल 'के शब्द सम्मोहित करते हैं। ये ग़ज़लें रचनाकार की अमिट पहचान बनाने में सक्षम हैं। हां, मणि-कांचन संयोग हो यदि इन ग़ज़लों को मूर्धन्य ग़ज़ल गायक अपना स्वर दें। तब ये ग़ज़लें हर ग़ज़ल प्रेमी की जुबान पर होंगी। साहिल की हर ग़ज़ल, हर शेर में इनकी छाप है यह कौशल किसी भी रचनाकार को बहुत मुश्किल से मिलता है। कृति का नाम है 'जिसे मैं कह नहीं पाया' लेकिन मेरा मानना है कि ग़ज़लकार को जो कहना था बखूबी कह दिया है। उन्हें इस कृति के लिए हार्दिक बधाई।

यादों के आंगन में त्योहार



डॉ. संगीता बिंदल
पुणे

समय का पहिया अपनी गति से घूमता रहता है। ऋतुएँ बदलती हैं, वर्ष बीतते जाते हैं, चेहरे बदल जाते हैं और जीवन की व्यस्तताएँ हमारे चारों ओर एक नया संसार बुन देती हैं। फिर भी कुछ स्मृतियाँ ऐसी होती हैं, जिन पर समय की धूल कभी नहीं जमती। वे मन के किसी कोने में वैसे ही सुरक्षित रहती हैं—ताज़ा, उजली और आत्मीय।



त्योहार आते हैं तो मन अनायास ही उन्हीं स्मृतियों के झरोखे खोलने लगता है। आज जब त्योहार बाज़ार की चकाचौंध, रंग-बिरंगी रोशनियों, ऑनलाइन खरीदारी और मोबाइल पर आने वाली शुभकामनाओं के बीच हमारे दरवाज़े पर दस्तक देते हैं, तब बचपन के वे त्योहार बहुत याद आते हैं, जिनमें साधन कम थे, लेकिन अपनापन बहुत था। तब त्योहार कैलेंडर पर अंकित कोई तारीख भर नहीं होते थे; वे परिवार के साथ मिलने, हँसने, रूठने-मनाने और प्रेम बाँटने के बहाने हुआ करते थे।

बचपन में त्योहार की आहट भर से मन में एक अलग ही उत्साह भर जाता था। स्कूल की छुट्टियों की प्रतीक्षा, नए कपड़ों को बार-बार निकालकर देखना, घर की साफ-सफाई में अपनी छोटी-सी भूमिका निभाना और सबसे बढ़कर दादा-दादी या नाना-नानी के घर जाने का इंतज़ार—इन सबमें ही त्योहार की आधी खुशी समाई रहती थी।

दादा-दादी का घर जैसे त्योहारों के दिनों में कुछ और ही बड़ा हो जाता था। वही पुराना आँगन, वही मिट्टी की सौंधी गंध, वही बरामदे की चारपाइयाँ और वही रसोई, जहाँ सुबह से शाम तक कुछ न कुछ पकता रहता था। लगता था जैसे घर की दीवारें भी उत्सव में शामिल हो गई हों।

त्योहार से कई दिन पहले ही तैयारियाँ शुरू हो जाती थीं। दादा जी बाज़ार से एक बड़ा-सा झोला लेकर लौटते—जिसमें पूजा की सामग्री, मिट्टी के दीये, रूई की बत्तियाँ, तेल और न जाने क्या-क्या होता। हम बच्चे उत्सुकता से झोले के चारों ओर जमा हो जाते और हर वस्तु को ऐसे देखते, जैसे कोई अनमोल खज़ाना हाथ लग गया हो।

फिर दादी हमें अपने पास बैठाकर दीयों में तेल और बाती लगाना सिखातीं। कभी किसी की बाती टेढ़ी हो जाती, कभी किसी दीये में तेल ज़्यादा भर जाता

और कभी कोई बच्चा उत्साह में तेल ही गिरा देता। दादी डाँटती भी थीं, हँसती भी थीं और फिर बड़े धैर्य से सब ठीक कर देती थीं।

तब कहाँ समझते थे कि यह केवल दीये सजाने का काम नहीं है! आज पीछे मुड़कर देखते हैं तो लगता है कि दादी उन छोटी-छोटी गतिविधियों के बहाने हमें



जीवन की बहुत बड़ी बातें सिखा रही थीं—धैर्य, सहभागिता, सलीका और सबसे बढ़कर साथ रहने का आनंद। वे रिश्तों को किसी पाठ की तरह नहीं पढ़ाती थीं; अपने व्यवहार से उन्हें हमारे भीतर उतार देती थीं।

त्योहारों की असली रंगत तो रसोईघर से छनकर आती थी।

दादी या नानी के रसोईघर में प्रवेश करते ही लगता था कि त्योहार सचमुच आ गया है। कहीं घी की खुशबू, कहीं भुने हुए मेवे की महक, कहीं इलायची की सुगंध और कहीं गरम-गरम पकवानों की आवाज़। गुझिया के मोयन की खुशबू, ताज़े बने मावे की मिठास, देसी घी में तली मठरी और शक्करपारे—इन सबकी खुशबू आज भी स्मृतियों में वैसी ही बसी हुई है।

नानी के हाथ का हलवा हो या दादी के हाथ की गुझिया, उसमें स्वाद के साथ एक ऐसा अपनापन घुला रहता था, जिसे किसी रेसिपी में दर्ज नहीं किया जा सकता। आज बाज़ार में कितनी ही सुंदर पैकिंग में महँगी और ब्रांडेड मिठाइयाँ उपलब्ध हैं, पर बचपन में खाए उन पकवानों की बराबरी शायद कोई मिठाई नहीं कर सकती।

क्योंकि उस स्वाद में केवल चीनी, गुड़, घी या मावे की मिठास नहीं थी—उसमें वात्सल्य की मिठास थी।

आज समझ आता है कि दादी के हाथों की गुझिया इसलिए इतनी स्वादिष्ट नहीं थी कि उसमें कोई विशेष सामग्री पड़ती थी; वह इसलिए स्वादिष्ट थी क्योंकि उसे बनाते समय उनके मन में अपने बच्चों और नाती-पोतों के लिए प्रेम भरा रहता था।

और शायद यही कारण है कि कुछ स्वाद उम्र के साथ फीके नहीं पड़ते। वे जीभ पर नहीं, सीधे स्मृतियों में बस जाते हैं।

शाम होते-होते पूरा परिवार आँगन में इकट्ठा हो जाता। किसी के हाथ में पूजा की थाली होती, कोई दीये सजा रहा होता, कोई रंगोली बना रहा होता और बच्चे पटाखों को लेकर अपनी-अपनी योजनाएँ बना रहे होते। भाई-बहनों के बीच कभी पटाखों को लेकर बहस होती, कभी रूठना-मनाना और फिर थोड़ी ही

देर में वही बच्चे एक-दूसरे के हाथ पकड़कर खुशी से दौड़ते दिखाई देते।

बड़े-बुज़ुर्ग एक ओर बैठकर बच्चों को देखते रहते। उनके चेहरों पर एक ऐसी तृप्ति होती थी, जिसे शब्दों में बाँधना कठिन है। शायद अपने बाद आने वाली पीढ़ी को उसी तरह हँसते-खेलते देखकर उन्हें लगता था कि जीवन ने उन्हें जो दिया, वह व्यर्थ नहीं गया।

उन दिनों न टीवी का इतना आकर्षण था, न मोबाइल स्क्रीन का मोह। न हर पल को कैमरे में कैद करने की बेचैनी थी और न यह चिंता कि त्योहार की तस्वीर सोशल मीडिया पर कैसी दिखाई देगी।

हम त्योहार जीते थे, उन्हें केवल दिखाते नहीं थे।

आज तस्वीरें बहुत हैं, संपर्क बहुत हैं, सुविधाएँ बहुत हैं, फिर भी कहीं न कहीं वह सामूहिकता कम होती दिखाई देती है। परिवार एक ही घर में बैठा हो सकता है, लेकिन हर व्यक्ति अपनी-अपनी स्क्रीन में व्यस्त हो जाता है। शुभकामनाएँ संदेशों में पहुँच जाती हैं, मिठाइयाँ ऑनलाइन घर आ जाती हैं और दीपक जलाने से पहले ही उसकी तस्वीर साझा करने की तैयारी शुरू हो जाती है।

निस्संदेह समय बदलता है और बदलती जीवनशैली को स्वीकार करना भी आवश्यक है । आधुनिकता अपने साथ अनेक सुविधाएँ लेकर आई है। दूर बैठे अपने लोगों तक शुभकामनाएँ पहुँचाना आज पहले से कहीं आसान है। लेकिन सुविधा के इस विस्तार के बीच कहीं ऐसा न हो कि साथ होने का सुख ही सुविधा के पीछे छूट जाए।

त्योहारों का अर्थ केवल घर को सजाना नहीं, मन को भी सजाना है । केवल दीप जलाना नहीं, रिश्तों में उजाला करना है। केवल मिठाई बाँटना नहीं, मन की कड़वाहट कम करना है । केवल शुभकामना भेजना नहीं, किसी अपने के पास बैठकर उसका हाथ थामना भी है।

कभी-कभी लगता है कि बचपन के वे त्योहार इसलिए इतने सुंदर थे क्योंकि तब हमारे पास समय था—एक-दूसरे के लिए समय।

आज हमारे पास साधन अधिक हैं, लेकिन समय कम है। इसलिए शायद इस बार त्योहार पर हमें किसी महँगी वस्तु की नहीं, किसी अपने को अपना समय देने की आवश्यकता है। घर के किसी बुज़ुर्ग के पास बैठकर उनकी पुरानी बातें सुनना, बच्चों के साथ मिलकर दीये सजाना, परिवार के साथ बैठकर घर का कोई पारंपरिक पकवान बनाना या बस कुछ देर बिना मोबाइल के एक-दूसरे के साथ रहना—शायद यही वे छोटी-छोटी बातें हैं, जो आने वाले वर्षों में हमारी अपनी स्मृतियाँ बनेंगी।

क्योंकि आज हम जिन बचपन की यादों को संजोकर बैठे हैं, वे भी कभी किसी साधारण-से दिन में ही बनी थीं। तब हमें कहाँ पता था कि दादी के साथ बैठकर दीयों में बाती लगाना, नानी के हाथ का हलवा खाना या आँगन में भाई-बहनों के साथ पटाखों के लिए झगड़ना—एक दिन जीवन की सबसे अनमोल स्मृतियाँ बन जाएगा।

इसलिए आने वाले उत्सवों में आइए, अपने भीतर के उस बच्चे को फिर से थोड़ा-सा जगाएँ। घर के आँगन में केवल दीये न जलाएँ, रिश्तों में भी उजाला करें। मिठाई की थाली के साथ थोड़ा समय और प्रेम भी परोसें। बुज़ुर्गों के पास बैठें, बच्चों के साथ हँसें और उन आत्मीय क्षणों को जीएँ जिन्हें कोई कैमरा पूरी तरह कैद नहीं कर सकता।

शायद तब हमें फिर महसूस होगा कि त्योहारों की असली चमक बिजली की झालरों में नहीं, और उनकी असली मिठास बाज़ार की मिठाइयों में नहीं है।

त्योहार तो तब भी उतना ही सुंदर था,
जब घर छोटा था, साधन कम थे,
पर आँगन में अपने बहुत थे।
वही पुराना आँगन हो,
वही अपनों का साथ,
फिर से खिल उठे बचपन—
वही पुरानी बात।



पितृऋण - दानवीर कर्ण की करुण पुकार

पितरों की पावन स्मृति में,
श्रद्धा हो हर हृदय की रीति में।
जिनसे पाया जीवन-संसार,
उनका करें सदा हम सत्कार।

पितृपक्ष की बेला आई,
स्मृतियों की सौंधी खुशबू लाई।
तर्पण से पावन हो संसार,
श्रद्धा से मिलता मन को प्यार।

सुनो कर्ण की करुण कहानी,
दानवीर की अमर निशानी।
जो भी आया उसके द्वार,
खाली न लौटा वह हर बार।

स्वर्ण दिया या रत्न अपार,
कर दिया सब कुछ दान बारंबार।
यश से गूँजा सकल संसार,
कर्ण बना दानवीर महान।

जब कर्ण ने तन त्याग दिया,
स्वर्गलोक में स्थान लिया।
पुण्य मिला, सम्मान मिला,
पर भोजन का न नाम मिला।

स्वर्ण-पात्र थे चारों ओर,
पर अन्न न था उनमें कहीं और।
जल था निर्मल, निर्मल धार,
फिर भी कर्ण रहे प्यासे लाचार।

कर्ण ने पूछा—"हे भगवान!
क्यों मिला मुझे यह कठिन विधान?
जीवन भर मैंने दान किया,
हर याचक का सम्मान किया।

फिर क्यों आज यह भूख-प्यास?
क्यों मन में है इतनी त्रास?"
दिव्य वाणी ने कहा पुकार—
"तुम्हारा दान था अपरंपार।
पर एक ऋण रह गया अधूरा,
जिसका स्मरण न किया था पूरा।

धन का दान किया हर बार,
पर पितरों को न दिया अर्घ्य-उपहार।
जिनसे पाया जीवन-आधार,
उनका भी था तुम पर अधिकार।"

सुनकर कर्ण हुए अश्रुपूरित,
मन हुआ उनका अति द्रवित।
बोले—"मुझसे भूल हुई,
पितृ-स्मृति में चूक हुई।

मुझे एक अवसर फिर दो,
पितृऋण चुकाने का वर दो।"

धरती पर फिर कर्ण आए,
पितरों के निमित्त अर्घ्य चढ़ाए।
श्रद्धा से किया तर्पण-दान,
अर्पित किया अन्न और सम्मान।

जल अर्पित किया प्रेम अपार,
पितरों का किया मन से सत्कार।
जब तृप्त हुए पितृगण सारे,
कर्ण के मिट गए दुख सारे।

आँखों से आँसू बहते गए,
मन के संशय ढलते गए।
कर्ण समझे जीवन का सार—
पितृऋण सबसे बड़ा उपकार।

दानवीर थे, दान दिया,
पर पितरों को भूल गए थे।
तर्पण ने वह भूल मिटाई,
मन में फिर से शांति समाई।

धन-संपत्ति सब यहीं रहेगी,
साँस हमारी एक दिन ढलेगी।
साथ चलेगा शुभ आचार,
साथ रहेगा संस्कार।

माता-पिता और पूर्वज सारे,
जीवन के हैं दीप हमारे।
उनका रखना सदा सम्मान,
यही सनातन का है ज्ञान।

पितरों को श्रद्धा से याद करो,
मन में उनका आशीष भरो।
तर्पण-श्राद्ध करो सादर,
यही संस्कृति का सच्चा आदर।

कर्ण-कथा का यही पुकार—
पितरों का रखिए सदा सत्कार।
जिनसे मिला जीवन का आधार,
उनको शत-शत नमस्कार!



चित्रा शर्मा 'वीथिका'
ऋषिकेश

समझा न कौशल तो वक्त समझा देगा

खिलके महक रहा, आज उपवन जो भी,
हरा भरा बाग कल, ये उजड़ जाएगा।
बदलाव है अटल, नियम प्रकृति का जी,
कभी ये बसंत कभी, पतझड़ आएगा॥

हरियाली से लदा था, मधुमास में जो पेड़,
सूखके उसका हर, पात गिर जाएगा।
कर ले तू संतुलित, अपना ये अभिमान,
एक दिन मुट्ठी भर, राख बन जाएगा॥

है यहां ताकतवर, एक से बढ़के एक,
साम्राज्य जबरदस्ती, तेरा छिन जाएगा।
बचेगा न यहां कोई, कालजयी रावण भी,
कोई तो जरूर राम, बनकर आएगा॥

मानव मानवता का, खून मत करे कभी,
नहीं तो वजूद तेरा, भी न बच पाएगा।
घाव जो दिए हैं तूने, बेकसूर मासूमों को,
हाय उनकी से लोहे, सा पिघल जाएगा॥

पद और ओहदे ये, कुछ दिन के हैं यहां,
मत मानवता छोड़, सदा पछताएगा।
कभी भी न हुई खाली, शूरवीरों से धरती,
प्रतिशोध में घरौंदा, तेरा मिट जाएगा॥

होगा ऐसा बदहाल, सोचा भी न होगा तूने,
बेवजह जो लोगों पे , तू कहर ढाएगा।
तुझपै भी ढाये कोई, कहर लगेगा कैसा,
समझा न कौशल तो, वक्त समझा देगा॥



वीरेन्द्र सिंह कौशल
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

तू अपना काम करत चल

समय जो भी गुजर जाए
नहीं वह लौट कर आए॥

न बैठा हाथ अपने मल
तू अपना काम करत चल
ठहर तू मत कहीं जाना
किसी को यूँ न अपनाना
वचन इतना सदा करना
जिसे तू पूर्ण कर पाये॥

समय जो भी गुजर जाए
नहीं वह लौट कर आए॥

ये दुनिया एक सपना है
बता तू कौन अपना है
मुसाफिर हैं सभी भटके
भंवर में प्राण हैं अटके
किये जा कर्म तू ऐसा
सभी में प्यार भर जाए॥

समय जो भी गुजर जाए
नहीं वह लौट कर आए॥

मधुर वाणी सुहानी हो
भरा आँखों में पानी हो
महकते भाव हों मन के
सुशोभित रंग जीवन के
रखें व्यवहार दीपक-सा
तमस धरती का हर जाए॥

समय जो भी गुजर जाए
नहीं वह लौट कर आए॥

धर्म का पथ सजाना तू
निडर हो बढ़ते जाना तू
बसा निज भाव में गीता
विनय करती है संगीता
बढ़ा चल राह सद्गति की
तेरा जीवन सँवर जाए॥

समय जो भी गुजर जाए
नहीं वह लौट कर आए॥



संगीता अहलावत

ग़ज़ल

इल्ज़ाम लोग हम पे लगायें तो क्या करे
झूठो को आईना न दिखायें तो क्या करे

मेरे लिए न अपना बनायें तो क्या करे
नज़दीक मेरे आप न आये तो क्या करे

वो हरकतों से बाज न आये तो क्या करे
मजदूरो बेकसों को सताए तो क्या करे

सच बोलना गुनाह है महफ़िल में आपकी
ताला जुवान पर न लगाए तो क्या करे

भड़की हुई है आग ताअस्सुब की हर तरफ़
हम अपने आप को न बचायें तो क्या करे

मुख़लिस वो हमको देखते रहते है प्यार से
उनकी तरफ़ कदम न बढ़ाये तो क्या करे

पी एस परिहार
दमोह

पाठक एवं लेखकों द्वारा प्राप्त

प्रतिक्रियाएँ

आभार एवं अभिनंदन !

काव्य शैली — राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के सितंबर अंक का विशेषांक "शिक्षक—शिक्षा की रीढ़" देखकर मन सचमुच आनंद और गौरव से भर उठा।

शिक्षकों को समर्पित इस विशेषांक में मेरी कविता "शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता" को स्थान देकर आपने मेरी भावनाओं को सम्मान दिया, इसके लिए आदरणीय शैली जी एवं संपादक मंडल के प्रति हृदय से आभार।

शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि पीढ़ियों के निर्माण में अपनी भूमिका निभाने वाला संस्कार-शिल्पी है। इसलिए शिक्षक को केंद्र में रखकर निकाला गया यह विशेषांक शिक्षा के साथ-साथ साहित्य, कला और संस्कृति के सुंदर समन्वय का भी परिचायक है।

काव्य शैली जिस आत्मीयता और गरिमा के साथ रचनाकारों को मंच प्रदान कर रही है, वह निश्चित ही सराहनीय है। साहित्य की संवेदना को पाठकों तक पहुँचाने की यह यात्रा निरंतर समृद्ध होती रहे—इसी शुभकामना के साथ।

- डॉ. संगीता बिंदल
पुणे

सितंबर माह का अंक का कवर पेज ही बहुत आकर्षक है, इस अंक में प्रकाशित हुई सभी रचनाएं बार बार पढ़ने का मन होता है।

इस अंक में शिक्षा के द्वारा माता-पिता, शिक्षण, शिक्षक, पुस्तक, समाज, राष्ट्र, राष्ट्रभाषा हिंदी, सेहत, बच्चों की पुस्तक प्रति उदासीनता, शिक्षक की निवृत्ति और प्रवृत्ति और शिक्षक के लिए हर दिन शिक्षक दिन है, कलम यानी हर बात जो जरूरी है सब का खूब अच्छे से संकलन किया गया है।

सभी रचनाकारों का शुक्रिया एवं हार्दिक बधाई।

मेरी रचना छोटी सी ही थी फिर भी पत्रिका में स्थान देने के लिए शैली जी एवं संपादन टीम का हृदय से आभार।

- मित्तल टिलवा
वडोदरा, गुजरात

मेरे द्वारा भेजी गई रचना प्रकाशित करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद काव्यशैली।

आपके कुशल संपादन से सीख कर हम भी आगे बढ़ रहे हैं और अपने व्यस्तताओं के चलते कुछ समय निकालकर अपने ज्ञान और समझ को आपकी पत्रिका द्वारा समाज को पहुंचाने का प्रयास करते हैं और हमारा यह छोटा सा प्रयास आपके बहुत बड़े प्रयास द्वारा हमें समाज तक पहुंचाने का माध्यम प्रदान करता है।

- पूजा सक्सेना जी
ग्वालियर



DLHIN/25/A0564

काव्यशैली

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

YouTube

हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े

साहित्य, कला, संस्कृति को समर्पित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रतिमाह दिल्ली से प्रकाशित

- कविता, गीत, ग़ज़ल, काव्य की विभिन विधाओं की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन
- शिक्षा, संस्कृति, कला आधारित कहानियों, लेख - आलेख
- 'बोलती किताबें' रीडर्स क्लब से बच्चों और बड़ों को जोड़ कर उनमें पाठन के प्रति रूचि जगाना
- वर्ष भर आयोजित साहित्यिक कार्यशाला, कार्यक्रमों में सहभागिता का अवसर
- साहित्य जगत में पहचान बनाने का अवसर
- किसी विशेष व्यक्तित्व पर विशेषांक प्रकाशन की सुविधा
- हर माह पत्रिका की प्रति प्राप्त करने हेतु सब्सक्रिप्शन लें और देश-विदेश के साहित्यकारों से जुड़े



आइए शब्दों की इस पावन यात्रा में
साथ चले, साथ बढ़े

SUBSCRIPTION DETAIL

1500/-
वार्षिक

पत्रिका से जुड़ने एवं अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें :
9425478866
+917982407065
ईमेल : kavyashaily049@gmail.com

काव्यशैली - जहाँ शब्दों में संस्कार, विचारों में विस्तार और भावों में सुंदरता है।

लोकतंत्र की हत्या

- विकास संतोष

कैसे लिखकर कहूं मैं अपनी बातों को,
अब तो लिखने पर भी पाबंदी है।

खोलूं कैसे अपने होंठों को,
अब तो बोलनें पर भी तालाबंदी है।

जंतर-मंतर पर हों लोकतंत्र की हत्या,
भीड़ के चारों ओर घेराबंदी हैं।

वो जमाना छूट गये पीछे,
जिसमें सरकारों की होती नसबंदी हैं।

अब तो लाठी-डंडों से स्वागत होतें हैं,
अब कहां अभिव्यक्ति की आजादी हैं।

युवाओं के सपनों को कुचलना,
हुक्मरानों के लिए शाबाशी हैं।

वो आन्दोलन जिसमें लोकतंत्र में शक्ति हैं,
अब तानाशाही के आगे सरपरस्ती भक्ति हैं।

अपने हुनर को त्याग कर बालक,
चुनता आन्दोलन की बस्ती हैं।

निराश होकर एक दिन सत्ता से,
करता वह खुदकुशी हैं।

कैसे लिखकर कहूं मैं अपनी बातों को,
अब तो लिखने पर भी पाबंदी है।

सदस्यगण



E-mail : kavyashaily049@gmail.com Mob. : 79824 07065 9425478866


काव्यशैली
राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
presents
किस्सा-कोना
बाल साहित्योत्सव
• सृजनशाला • काव्य चौपाल • पुस्तक मेला
• कहानीवाचन • पुस्तक लोकार्पण
माहः नवंबर
स्थानः दिल्ली
संपर्क सूत्र (व्हाट्सएप करें): 9425478866, 9136152472